अमर स्वामी प्रकाशन विभाग, गाज़ियाबाद

प्रार्थना

हे सर्वाधार, सर्वान्तर्यामिन् परमेश्वर! आप अनन्तकाल से अपने उपकारों की वर्षा किये जाते हो। प्राणिमात्र की सम्पूर्ण कामनाओं को आप ही प्रतिक्षण पूर्ण करते हो। हमारे लिए जो कुछ शुभ और हितकर है उसे आप बिना माँगे स्वयं हमारी झोली में डालते जाते हो, आपके आँचल में अविचल शान्ति तथा आनन्द का वास है। आपकी चरण-शरण की शीतल छाया में परम तृप्ति है, शाश्वत सुख की उपलब्धि है तथा सब अभिलषित पदार्थों की प्राप्ति है।

हे जगत्पिता परमेश्वर! हममें सच्ची श्रद्धा तथा विश्वास हो। हम आपकी अमृतमयी गोद में बैठने के अधिकारी बनें। अन्तःकरण को मलिन बनाने वाली स्वार्थ तथा संकीर्णता की सब क्षुद्र भावनाओं से हम ऊँचे उठें। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि कुटिल भावनाओं तथा सब मलिन वासनाओं को हम दूर करें। अपने हृदय की आसुरी प्रवृत्तियों के साथ युद्ध में विजय पाने के लिए हे प्रभो! हम आपको ही पुकारते हैं और आपका ही आँचल पकड़ते हैं।

हे परम पावन प्रभो! हममें सात्त्विक प्रवृत्तियाँ जाग्रत हों। क्षमा, सरलता, स्थिरता, निर्भयता, अहंकार-शून्यता इत्यादि शुभ भावनाएँ हमारी सम्पत्ति हों। हमारा शरीर स्वस्थ तथा परिपुष्ट हो, मन सूक्ष्म तथा उन्नत हो, आत्मा पवित्र तथा सुन्दर हो, आपके संस्पर्श से हमारी सारी शक्तियाँ विकसित हों। हृदय दया तथा सहानुभूति से भरा हो। हमारी वाणी में मिठास हो तथा दृष्टि में प्यार हो। विद्या और ज्ञान से हम परिपूर्ण हों। हमारा व्यक्तित्व महान् तथा विशाल हो।

हे प्रभो! आपने आशीर्वादों की वर्षा करो। दीनातिदीनों के मध्य में विचरने वाले आपके चरणारविन्दों में हमारा जीवन अर्पित हो। इसे अपनी सेवा में लेकर हमें कृतार्थ करें।

ओ३म् शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

जिहाद का सच

(समस्या और समाधान)

प्रस्तुतकर्त्ता

स्वामी अखिलानन्द सरस्वती

(वैदिक प्रवक्ता)

सम्पादक

लाजपत राय अग्रवाल

(वैदिक मिशनरी)

प्रकाशक

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद, पिन०-२०१००१ (उ० प्र०)

दूरभाष : ०१२०-२७०१०९५, ०१२०-२७०००४२

०९९१०३३६७१५, ०९८१०८१६७१५, ०९८७१२३०३२१

E-mail : lajpatralaggarwal1058@gmail.com

Website: www.amarswamiprakashanvibhag.com

प्रथम संस्करण : सितम्बर सन् २०१८ ई०

मूल्य : तीस रुपये

अखिलानन्द सरस्वती

सम्पर्क- ०९४१२२१०२६९२, ०९९१०३३६७५

गर आप हिन्दू हैं तो, इसको ज़रा पढ़ लीजिये।
दुश्मनों के षडयन्त्रों से, सबको सचेत कर दीजिये॥

नोटः कोई भी हिन्दू लड़की अगर कहीं इस 'लव जिहाद' वाली स्थिति में फंस जाती है, तो उससे निजात पाने के लिए उपरोक्त मोबाइल नम्बर पर तुरन्त सम्पर्क करें।

— अखिलानन्द सरस्वती
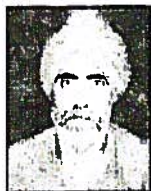
स्वामी अखिलानन्द जी अपने मिशन में सदैव सफलता पूर्वक आगे बढ़ते रहें, बस! यही इन्हें मेरा साधुवाद है।

स्वामी शिवानन्द सरस्वती

आचार्य जी की तरफ से

मेरी प्रेरणा और आग्रह पर स्वामी जी ने प्रस्तुत पुस्तक को तैयार किया है, वर्तमान समय में इसकी कितनी उपयोगिता है? इसका अनुमान आप स्वयं प्रस्तुत पुस्तक को पढ़कर लगा पायेंगे। स्वामी अखिलानन्द जी जहां एक सफल प्रवक्ता हैं, वहां एक अच्छे चिन्तक, विचारक और लेखक भी हैं, आपका लगभग सारा समय प्रचार में ही बीतता है, आप जगह-जगह पर जाकर लोगों को अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक करते रहते हैं।

यह हर्ष का विषय है कि स्वामी जी की यह पुस्तक एक ऐसे विख्यात प्रतिष्ठान के द्वारा प्रकाशित हुई है, जिसकी बराबरी का वर्तमान में इतना बड़ा प्रतिष्ठान नहीं है, जिसका कार्य क्षेत्र इतना विस्तृत हो, कि भारत ही नहीं, अपितु अनेकों विदेशों में भी जिसके कार्य की धूम मची हुई है। जिसके कारण यह पुस्तक अधिक से अधिक लोगों तक पहुंच सकेगी। आशा है पाठकगण इससे भरपूर लाभ उठायेंगे।

निवेदक-
आचार्य हर्षदेव कुमार

सम्पादकीय

लाजपत राय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)

प्रस्तुत पुस्तक 'जिहाद का सच' विषय को लेकर लिखी गई एक प्रामाणिक पुस्तक है, जिसमें जिहाद के अनेकों रूपों को दर्शाया गया है। आज पूरा विश्व इसकी चपेट में आया हुआ है, जिसका परिणाम चहुं ओर खून-खराबा और अशान्ति का माहौल बना हुआ है, कहीं पर भी कोई प्राणी सुरक्षित नहीं है।

विद्वान लेखक ने अनेकों उदाहरणों तथा प्रमाणों से जिहाद की असलियत को उजागर किया है, जिसके बारे में आज प्रत्येक स्त्री-पुरूष को जानना इसलिए जरूरी है कि वो इस भयंकर जिहादिक विचारधारा से अपना बचाव कर सकें।

प्रत्येक हिन्दू विचारधारा रखने वाले व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि इस पुस्तक का अधिक से अधिक प्रचार व प्रसार करे, यह मात्र उसी के हित में नहीं है, अपितु समूचे समाज व देश की सहिष्णुता व अखण्डता को बनाये रखने के लिए एक श्लांघनीय कदम है।

लेखक इस स्तुत्य प्रयास के लिए बधाई एवं प्रशंसा का पात्र है।

निवेदक- **लाजपत राय अग्रवाल** (वैदिक मिशनरी)

सम्पादकीय

लाजपत राय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)

प्रस्तुत पुस्तक 'जिहाद का सच्च' विषय को लेकर लिखी गई एक प्रामाणिक पुस्तक है, जिसमें जिहाद के अनेकों रूपों को दर्शाया गया है। आज पूरा विश्व इसकी चपेट में आया हुआ है, जिसका परिणाम चहुं ओर खून-खराबा और अशान्ति का माहौल बना हुआ है, कहीं पर भी कोई प्राणी सुरक्षित नहीं है।

विद्वान लेखक ने अनेकों उदाहरणों तथा प्रमाणों से जिहाद की असलियत को उजागर किया है, जिसके बारे में आज प्रत्येक स्त्री-पुरूष को जानना इसलिए जरूरी है कि वो इस भयंकर जिहादिक विचारधारा से अपना बचाव कर सकें।

प्रत्येक हिन्दू विचारधारा रखने वाले व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि इस पुस्तक का अधिक से अधिक प्रचार व प्रसार करे, यह मात्र उसी के हित में नहीं है, अपितु समूचे समाज व देश की सहिष्णुता व अखण्डता को बनाये रखने के लिए एक श्लांघनीय कदम है।

लेखक इस स्तूत्य प्रयास के लिए बधाई एवं प्रशंसा का पात्र है।

निवेदक- लाजपत राय अग्रवाल (वैदिक मिशनरी)

भूमिका

हजरत मुहम्मद साहब ने एक ईश्वर की इबादत करने के लिए अरबवासियों से कहा चूँकि उस समय पाखण्ड मूर्तिपूजा आदि अधिक बढ़ गये थे। उस समय तरह-तरह की कुरीतियाँ चल रही थीं, मुहम्मद ने उनका विरोध किया। जब मुहम्मद साहब हाथ फैलाकर इबादत किया करते थे, तब उनके शिष्यों ने इसका कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि भारत से मुझे एक ईश्वरवाद के झरोखे आते हैं।

मुहम्मद साहब ने बुतपूजा का विरोध किया इसके लिए उन्होंने युद्ध का भी सहारा लिया। इसके लिए उन्होंने अपना नया पंथ चलाया। अर्थात एक खुदा को माननेवाले। कालान्तर में अरब के राजाओं ने इस्लाम के प्रचार के लिए क्रूरता का रास्ता भी अपनाया। जिसमें कहा गया कि ऊपर अल्लाह और नीचे जमीन पर सिर्फ उसके मानने वाले बन्दे ही रहेंगे, बाकी सब काफिर हैं। उन्हें मारा जाये। ये ही वो विचारधारा है जिस पर आज के आतंकवादी चल रहे हैं। मुहम्मद साहब के संदेशों में विश्वास रखने वाले बहुत से मुस्लिम युवा इससे प्रभावित हो रहे हैं। इसका दुष्परिणाम यह है कि ज़िहाद के नाम पर. लव जिहाद, जनसंख्या जिहाद, कट्टरवाद, व आतंकवाद दिनों दिन अनेकों रूपों में निरन्तर बढ़ रहा है।

भारत में रह रहे, सच्चे मुस्लिम गुरूओं को चाहिए कि वे सूफियों को आगे लायें, जो शान्ति का पैगाम दें, सरकार को चाहिये कि ऐसे धर्मगुरूओं को आगे लाकर उनके द्वारा गाँव-गाँव

में जाकर कट्टरपंथियों की पोल खोलें। गाँव-गाँव में सरकार के गुप्तचर हों, जो न माने, ऐसे कट्टरपंथियों को जेल में डालें। आतंकवाद के विरूद्ध सख्त कानून बने, दूसरे धर्म में शादियाँ केवल दोनों परिवारों की रजामंदी से ही हो, वरना दण्डनीय अपराध माना जाये। जनसंख्या के लिए जनसंख्या नियन्त्रण कानून पास हो कि दो बच्चों से अधिक बच्चे पैदा न करें अन्यथा उनका वोट देने का अधिकार खत्म हो, राशनकार्ड जब्त हो तथा समस्त दी जाने वाली सरकारी सुविधाएँ समाप्त कर दी जायें।

कहते हैं कि जनसंख्या बढ़ने का कारण अशिक्षा है तो ठीक है जब तक देश का मुस्लिम या अन्य अशिक्षित वर्ग ९९% तक शिक्षित नहीं हो जाता तब तक सरकार द्वारा 'जनसंख्या नियन्त्रण कानून' लागू कर दिया जाये। जिहाद न तो देश के लिए ही सही है, और ना ही मुस्लिमों के लिए सही है। विश्व में आज मुस्लिम सबसे अधिक सुरक्षित और स्वतन्त्र अगर कहीं हैं तो वो सिर्फ भारत में हैं। यदि आज भी इस जिहाद के मर्म को न समझा, तो निश्चित समझिये पूरा विश्व खतरे में पड़ना सुनिश्चित है। मैंने 'जिहाद' पर इस पुस्तक के अन्दर संक्षेप में कुछ विचार दिये हैं, जो वर्तमान समय की जबर्दस्त मांग है। देखो-

अगर डूबेगी कश्ती, तो डूबोगे सारे।
न तुम ही बचोगे, ना साथी तुम्हारे॥

इसलिए अय हिन्दुओं अब समय आ गया है, गफलत की नींद से जागो, और अपने कर्त्तव्य पालन के लिए कमर कसकर खड़े हो जाओ।

– **स्वामी अखिलानन्द सरस्वती**

लव जिहाद का सच

खुद को सैक्युलर बताने वाला मीडिया लम्बे समय तक **'लव जिहाद'** यानी मुस्लिम लड़कों द्वारा प्रेम के नाटक द्वारा दूसरे समुंदायों की लड़कियों को मुस्लिम बनाने के अभियान के अस्तित्व को नकारता रहा जबकि बीते १५-२० साल में धर्मान्तरण की यह गतिविधियां एक संगठित प्रयास का रूप पाती रही। हजारों लड़कियां प्रति वर्ष इसका शिकार हो रही थीं पर इस मीडिया के लिये उसका समाचार देना वर्जित था।

अब जब कुछ चैनल, और अखवार अपनी सैक्युलर कैंचुली त्यागकर 'लव जिहाद' की घटनाओं का समाचार देने लगे तो मीडिया के परम सैक्युलर हिस्से को कुछ समय के लिये सांप सूंघ गया। अपना सैक्युलर होश पुनः प्राप्त करने के बाद इन्होंने प्रथमतः 'लव जिहाद' के लिये नकारवाद की भंगिमा अपनायी। इन्होंने कहा- लव जिहाद हिन्दुवादियों का एक शिगूफा है, यह महज उनकी सियासत है, वगैरह वगैरह।

जब उसे बताया गया कि केवल हिन्दुवादी ही नहीं, ईसाई व अन्य समाज भी इसके विरोध में खड़ा है, उन्होंने केरल में सैंकड़ों मामले अदालत में दायर किये हैं, और यह कि न्यायपालिका 'लव जिहाद' का संज्ञान सन् २००६ ई० से लेती आ रही है तो अपनी नकारवादी भंगिमा पर टिकना इस मीडिया के लिये मुश्किल हो गया। फिर इसने 'लव जिहाद' के अस्तित्व को स्वीकार कर लिया, पर इसे राष्ट्रीय एकता के लिये मुफीद बताना

शुरू किया, वैसे ही जैसे तमाम वामपंथी इतिहासकारों को मध्यकालीन इतिहास में इस्लामी सुल्तानों के उन शयनकक्षों में राष्ट्रीय एकता के बीज अंकुरित होते दिखलाई देते थे जहां हिन्दू स्त्रियां अपहरण कर या पराजित हिन्दू ... मकों में छीनकर सुल्तानों की हवस की पूर्ति के लिये लायी जाती थीं बिल्कुल वैसा ही तर्क है कि 'लव जिहाद' अंतर्सामुदायिक एकता को बढ़ावा देता है।

अरे, अंतर्सामुदायिक एकता तो तब बढ़ेगी जब लड़की विवाहोपरांत भी अपनी पुरानी सामुदायिक पहचान से काट नहीं दी जायेगी।

पर 'लव जिहाद' का तो अर्थ ही यह है कि वह प्रेम के नाटक को धर्मान्तरण के अवसर के रूप में देखना है। दो समुदायों के बीच एकता तब तो बढ़ सकती थी। जब लड़की को विवाह बंधन के बाद भी अपने मूलधर्म में बने रहने दिया जाता, और उत्पन्न संतानों को व्यस्क होने के बाद खुद अपना धर्म चुनने की आजादी दी जाती। आईये लव जिहाद को और अधिक प्रश्नोत्तरों के माध्यम से समझें-

लव जिहाद के विषय में प्रश्नोत्तर

१. प्रश्न: 'लव जिहाद' किसे कहते है?

उत्तर: जब कोई मुसलमान युवक किसी गैर मुसलमान युवती को बहला फुसलाकर उसके शील को भंग करके, उससे निकाह करके उसको इस्लाम में दीक्षित कर लेता है। इसी को 'लव जिहाद' कहा जाता है।

२. प्रश्नः- 'लव जिहाद' क्यों किया जाता है?

उत्तरः- ताकि गैर मुसलमानों का शीघ्रता से इस्लामीकरण हो। क्योंकि जैसे किसी भी जाति को समाप्त करना हो तो उनकी. स्त्रियों को दूषित किया जाता है। जिससे कि वो अपने समाज में आत्मसम्मान खो दें और दूसरे समाज में जाने को बाध्य हो सकें। जिससे कि मुसलमान उस लड़की की सम्पत्ति का मालिक बने और उस लड़की के घर वाले सिर उठा कर जी भी न सकें। 'लव जिहाद' का मुख्य उद्देश्य है अल तकियाह (गज़्वा ए हिन्द) यानी कि भारत का इस्लामीकरण।

३. प्रश्नः- 'लव जिहाद' से इस्लामीकरण कैसे होता है?

उत्तरः- क्योंकि 'लव जिहाद' की शिकार युवती को पुनः उसका हिन्दू समाज अपनाने को तैयार नहीं होता है। और जिसके कारण उसके पास और कोई मार्ग शेष नहीं रहता तो वो मुसलमानी नर्क में जीने को विवश हो जाती है। तो इसी प्रकार जो उस लड़की के बच्चे होते हैं वो भी मुसलमान ही होते हैं। तो ऐसे मुसलमानों की संख्या वृद्धि होने से राष्ट्र शीघ्रता में इस्लामीकरण की ओर बढ़ता है।

४. प्रश्नः- 'लव जिहाद' की शिकार युवतियों की स्थिति कैसी होती है?

उत्तरः- 'लव जिहाद' की शिकार युवतियों की स्थिति नर्क से भी बदतर होती है। जैसा कि कई लड़कियों के मुसलमानों के साथ विवाह के बाद वो तलाक दे दी जाती है। और बाद में उनको वैश्यावृत्ति के धंधे में धकेल दिया जाता है। या फिर

उनको भारत की यात्रा पर आये अरब के शेखों को बेच दिया जाता है। जो उनको अपने साथ अरब देशों में ले जाते हैं। वहाँ उनको 'नमकीन बेगम' के नाम से सम्बोधित किया जाता है, उन्हें गुलाम बनाकर इनके साथ शोषण किया जाता है।

कई बार उनको नेपाल के माध्यम से पाकिस्तान भेजा जाता है, या फिर असम, त्रिपुरा या बंगाल से उनको बांग्लादेश भेजा जाता है (बंगाल की कांग्रेस सांसद रूमीनाथ इसकी ताजा उदाहरण है जिसे एक जिहादी ने फेसबुक के जरिये शिकार बनाया और बंग्लादेश भेज दिया)। ऐसे कई और उदाहरण मौजूद हैं।

५. प्रश्नः- राष्ट्र के इस्लामीकरण होने से क्या हानि होगी?

उत्तरः- किसी भी राष्ट्र का इस्लामीकरण होने से वहाँ कुरान का शरियः कानून लागू होता है, लोकतन्त्र समाप्त हो जाता है और अपने विचारों को व्यक्त करने की स्वतन्त्रता समाप्त हो जाती है। देश इस्लाम की अत्यन्त संकुचित और नीच विचारधारा में जकड़ा जाता है। जिसमें स्त्रियों का शोषण होता है। उनको पुरूषों की खेती समझा जाता है। जहाँ स्त्रियों का सम्मान नहीं, वहाँ पुरूष निर्दयी हो जाते हैं। पुरूषों के निर्दयी होने से समाज में भारी क्षोभ और वासनामय वातावरण पैदा होता है। जहाँ सत्ता इस्लाम के हाथों में है वो देश एक बूचड़खाना होता है, जिसमें मानवों की कटती हुई लाशें, पशुओं की कटती हुई लाशें दिखाई देती हैं। स्त्रियों को उनके अधिकारों से वंचित रखा जाता है। मुसलमान पुरूष जब चाहे उसे तीन बार 'तलाक तलाक तलाक' कहकर

उससे पीछा छुड़ा लेता है। खून के रिश्तों में या सगे रिश्तों में ही शादियाँ होने से नये जन्में बच्चों का मानसिक विकास नहीं हो पाता है। और उस इस्लामी देश में गैर मुसलमानों को अपने-अपने धार्मिक कार्य करने की आजादी नहीं होती। उनकी स्त्रियों को बंदूकों या तलवारों की नोक पर उठा लिया जाता है। इतिहास साक्षी है, जैसा कि यहूदी या ईसाई औरतों के साथ पैगम्बर मुहम्मद किया करता था। उनके धार्मिक उत्सवों पर हमले किये जाते हैं। जैसे कि मुस्लिम बाहुल्य काश्मीर में अमरनाथ यात्रियों के साथ होता है। स्त्रियों की आँखे नोंच ली जाती हैं। किसी स्त्री के साथ कोई पुरूष जब बलात्कार करता है तो दंड पुरूष को नहीं बल्कि स्त्री को ही दिया जाता है। स्त्रियों को ज़मीन में गाड़कर उन पर संगसार अर्थात् पत्थरों की बारिश की जाती है। चारों ओर मस्जिद से मौलवियों की मनहूस अज़ानें सुनाई देती हैं, ज़रा-ज़रा सी बातों पर मुसलमानी मौहल्लों में लड़ाईयाँ और खून-खराबा होता है, सड़कों पर लोगों के रास्ते रोककर नमाजें पढ़ी जाती हैं। तो ऐसी अनेकों हानियाँ मानव समाज को उठानी पड़ती हैं। जो कि देश के इस्लामीकरण का परिणाम है।

६. प्रश्नः- भारत में 'लव जिहाद' कैसे संचालित होता है?

उत्तरः- इसको संचालित करने के लिए पाकिस्तान, या अरब देशों से इनको वहाँ के शेखों द्वारा भारी पैसा आता है जो कि तेल के कुँओं के मालिक होते हैं। ये पैसा उनको All India Muslim Scholarship Fund के रूप में दिया जाता है। जिसके द्वारा प्रतिमाह इन मुस्लिम गुंडों को तैयार किया जाता है और

हिन्दू लड़कियों को फंसाने के लिये इनको रू० ८००० से लेकर रू० १०००० तक का मासिक वेतन दिया जाता है। इनके द्वारा मस्जिदों में किसी मुहल्ले के सभी मुसलमानों की मीटिंग रखी जाती है। जिसमें भाग लेने वाले अमीर से लेकर गरीब तबके के सभी लोग आते हैं, जिसमें रेड़ीवाला, शॉल बेचने वाले कश्मीरी पठान, घरों में काम करने वाले चमार आदि। इनको हिन्दू या सिक्ख इलाकों में घूम-घूमकर ये पता लगाने को कहा जाता है कि किस घर की लड़की जवान हो गई है। तो शॉल बेचने वाले पठान ये नज़र रखते हैं। और फिर ये लड़कियों की लिस्ट बनाई जाती है और जिहादी गुंडे जो दिखलाई देने में हट्टे-कट्टे हों उनको तैयार किया जाता है, उन्हें मोटर साईकिलें खरीद कर दी जाती हैं। जिनको मस्जिदों में रखा जाता है। तो ये युवक अपनी कलाईयों पर कलावा बाँध कर अपने नाम बदल कर हिन्दू नाम या कोई सामूहिक ऐसा नाम रख लेते हैं जिससे कि हिन्दू मुसलमान के भेद का पता ही न चल सके, जैसे बबलू-बिट्टू-सोनू आदि-आदि और इन लड़कियों के पीछे पड़ जाते हैं और अगर कोई लड़की दो सप्ताह के भीतर नहीं फॅसती तो फिर ये उसे छोड़कर अपनी लिस्ट की दूसरी लड़की पर अपने जिहाद को आज़माने के लिये निकल पड़ते हैं। तो ऐसे ही पूरे मोहल्ले में से कोई न कोई लड़की 'लव जिहाद' का शिकार हो ही जाती हैं।

दूसरा आधुनिक तरीका यह कि Social Networking Sites जैसे कि Facebook आदि पर ये लोग नकली Id या फिर अपनी

असली Id से ही हिन्दू लड़कियों को request भेजते हैं। और जैसे ही इनकी training होती है वैसे ही ये लोग इन लड़कियों को फाँसने के लिये तरह-तरह के message भेजते हैं। और वे लड़कियाँ इनके मोह जाल में फँसकर अपना सब कुछ गँवा देती हैं।

७. प्रश्नः- इसके सिवा क्या और भी तरीके हैं 'लव जिहाद' करने के या सिर्फ यही एक तरीका है?

उत्तरः- बहुत से तरीके हैं सभी के बारे में जान पाना तो बेहद कठिन है पर कुछ और बताते हैं। ये मुस्लिम जिहादी गुंडे स्कूलों कॉलेजों के चक्कर लगाते रहते हैं। और लड़कियों के पीछे पड़ जाते हैं। या फिर स्कूलों में पढने वाले मुस्लिम युवक अपनी मुस्लिम सहेलियों की सहायता से उनकी हिन्दू सहेलियों से दोस्ती करते हैं और धीरे-धीरे अपनी कारवाईयाँ शुरू कर देते हैं। या फिर कालेजों और स्कूलों के आगे मोबाइल की दुकानें मुसलमानों के द्वारा खोली जाती हैं। जिसमें जब हिन्दू, बौद्ध या जैन आदि लड़कियाँ फोन रिचार्ज करवाने जाती हैं, तो उनके नम्बरों को ये गलत इस्तेमाल करके आगे जिहादियों को बाँट देते हैं। जिससे कि वे लोग गंदे-गंदे अश्लील मैसेज भेजते हैं।

इन जिहदियों को ये सब करने की training भी जाती है कि किस प्रकार की लड़की की मानसिकता को समझकर उसे कैसे फाँसना है। तो ऐसे ही छोटे मोटे और भी तरीके हैं परन्तु मुख्य यही है।

८. प्रश्नः- इस 'लव जिहाद' के कुछ उदाहरण दीजिए।

उत्तरः- बड़े-बड़े उदाहरण आपके सामने हैं- Bollywood मायानगरी में मुसलमान अभिनेताओं की केवल हिन्दू पत्नियाँ ही क्यों होती हैं? शाहरुख खान, आमिर खान, फरदीन खान, सुहैल खान, अरबाज़ खान, सैफ अली खान, साजिद खान आदि कितने ही नाम हैं जिनकी शादियाँ हिन्दू लड़कियों से ही हुई हैं। इनमें से किसी को भी मुसलमान लड़कियाँ क्यों पसंद नहीं आई?

आमिर खान और सैफ अली खान की शादी तो एक की बजाय दो-दो हिन्दू लड़कियों से हुई। और इन्हीं को आदर्श मानकर हिन्दू लड़कियाँ मुसलमानों के चंगुल में फँसकर अपनी अस्मिता खो देती हैं। एक फिल्म आई थी जिसमें अभिषेक बच्चन का नाम आफताब होता है और वो अजय देवगण की बहन का किरदार निभा रही प्राची देसाई से प्रेम करता है तो अजय देवगण उसे रोकता है तो वो नीच लड़की सैफ और शाहरुख आदि का उदाहरण देती है और उनको अपना आदर्श स्वीकार करती है। तो ये देखकर हिन्दू लड़कियों के मनों पर क्या प्रभाव पड़ता है जरा सोचिये? तो ऐसे ही इन लड़कियों को परिणाम की परवाह नहीं होती है और इनको हर जिहादी सलमान या शाहरुख ही दिखलाई देता है, जिनके चक्कर में पड़कर ये अपना जीवन बर्बाद कर देती हैं।

९. प्रश्नः- ये सब करके इन मुसलमानों को क्या मिलता है?

उत्तरः- इनको ये सब करने के लिये मासिक वेतन और भारी ईनाम मिलता है। दूसरा कारण है मज़हबी जुनून क्योंकि इस्लाम की शिक्षा ही नफरत और कत्ल की बुनियाद पर टिकी हुई है,

और मस्जिद के मौलवियों के द्वारा झूठी मुहम्मदी जन्नत का लालच दिया जाना। वो कहते हैं कि अगर कम से कम एक हिन्दू लड़की से शादी करो और बदले में सातवें आसमान की जन्नत पाओ। तो चाहे वो जिहाद काफिरों की खेती को समाप्त करने का ही क्यों न हो इनके अरबी अल्लाह ने इनके लिए जन्नत तैयार कर रखी है। जिसमें फिर एक-एक मुसलमान ७२-७२ पाक साफ औरतों का आनंद लेता है।

१०. प्रश्नः- इन 'लव जिहादियों को हिन्दू लड़की से शादी करने या उसे नापाक करने का क्या इनाम मिलता है?

उत्तरः- ये निम्नलिखित इनाम गैर मुसलमान लड़कियों को फँसाने के लिए घोषित किये हुए हैं, देखिये-

सिक्ख लड़की	=	९ लाख
पंजाबी लड़की	=	८ लाख
हिन्दू ब्राह्मण लड़की	=	७ लाख
हिन्दू क्षत्रिय लड़की	=	६ लाख
हिन्दू वैश्य लड़की	=	५ लाख
हिन्दू दलित लड़की	=	२ लाख
हिन्दू जैन लड़की	=	४ लाख
बौद्ध लड़की	=	४.२ लाख
ईसाई कैथोलिक लड़की	=	३.५ लाख
ईसाई प्रोटेस्टैंट लड़की	=	३.२ लाख
शिया मुसलमान लड़की	=	४ लाख

ईनाम इनमे थोड़ा कम या अधिक भी हो सकता है।

उसमें ज्यादा अन्तर नहीं है।

११. प्रश्नः- ये 'लव जिहाद' के इनाम की घोषणा और उसका संचालन कहाँ से होता है?

उत्तरः- केरल का मालाबार ही इसका मुख्य संचालन केन्द्र है। परन्तु अब उसकी शाखायें पूरे भारत में फैल गई हैं। क्योंकि केरल में ही 'लव जिहाद' के ५००० से अधिक मामले कोर्ट के सामने आये हैं। तो पूरे भारत में कितने ऐसे मामले होंगे?

१२. प्रश्नः- क्या 'लव जिहाद' में केवल हिन्दू लड़कियों को ही लक्ष्य किया जाता है या अन्य को भी?

उत्तरः- भारत में हिन्दू बहुसंख्यक हैं जिसं कारण पहला लक्ष्य हिन्दू लड़कियाँ ही होती हैं। परन्तु इसके अतिरिक्त दूसरे मत (बौद्ध, जैन, बाल्मीकि, सिक्ख, ईसाई) की लड़कियाँ भी लक्ष्य की जाती हैं, क्योंकि इस्लाम की विचारधारा बहुत की कुंठित और संकुचित है जिसमें कि दूसरे मत पंथी के विरूद्ध उग्र घृणा का भाव विद्यमान है, और स्त्रिंयों को तो इस्लाम जानवरों से भी बदतर समझता है।

१३. प्रश्नः- हिन्दू लड़कियाँ 'लव जिहाद' में ही क्यों फंस जाती हैं? क्या इनमें दिमाग नहीं होता?

उत्तरः- इसके ये मुख्य कारण हैं-

१. हिन्दू घरों में जहां धार्मिक वातावरण नहीं रहता।

२. हिन्दू अपने बच्चों को वैदिक मत की श्रेष्ठता और अवैदिक मत की निकृष्टता नहीं बताता।

३. हिन्दू अपने एतिहासिक पूरूषों और स्त्रियों की जीवनियों

और उनके बलिदानों को नहीं बताता।

४. हिन्दू युवतियां अपने वीर योद्धाओं के स्थान पर बॉलिवुड के नायकों को अपना आदर्श मानती हैं।
५. घर में टेलीविजन पर सास बहु के सीरियल चलने के कारण घर का वातावरण और भी दूषित हो जाता है।
६. हिन्दू अपने बच्चे को धर्मनिरपेक्षता का पाठ पढ़ाता है और मुसलमान अपने बच्चे को दूसरों के प्रति नफरत सिखाता है जिस कारण ये हिन्दू लड़कियाँ मुसलमान लड़कों से घुलने मिलने में झिझकती नहीं।
७. फेसबुक पर ज्यादातर हिन्दू लड़कियों की प्रोफाइल देखा जो उन्होंने धार्मिक पेजों के बजाये, love, tv serial, pyar, ishq, bollywood masala, mickel jakson, shahrukh, salman, hritik आदि के पेज लाइक किये होते हैं। और उनकी friend list में मुसलमान युवकों की संख्या बहुत ही अधिक पायी जाती है।

१४. प्रश्नः- इन हिन्दू लड़कियों को 'लव जिहाद' के बारे में कोई समझाता क्यों नही?

उत्तरः- जब आप इनको समझाने लगते हैं तो ये लड़कियाँ प्रायः नीचे लिखी बातें बोलती हैं-

- आप तो नफरत फैलाते हो।
- क्यूँ मुस्लिम भी तो इन्सान ही होते हैं?
- तो इसमें बुराई ही क्या है?
- हमको इससे क्या लेना देना?

- हमें अपनी सोच बदलनी चाहिए, और इसी जातिवाद को खत्म करके decelopment करनी चाहिए।
- आपकी सोच पिछड़ी हुई है, देखो दुनिया के अनुसार आगे बढ़ो, इतनी hate speech मत फैलाओ।
- मुस्लिम बनने में कोई बुराई नहीं है, सभी मुसलमान बुरे नहीं होते।
- Hey you अपना काम करो mind your business.
- You know Dr. Abdul Kalam भी तो मुस्लिम हैं।
- U remember जोधा अकबर की great love story.

अब आप स्वयं जान लीजिये कि इन हिन्दू लड़कियों की मानसिकता कितनी नीच और गिरी हुई है। जिस जाति की स्त्रियों को अपने पराये का भेद नहीं पता, तो वे लव जिहादियों का शिकार नहीं होंगी तो और क्या होगा?

१५. प्रश्नः- इन हिन्दू लड़कियों को 'लव जिहाद' के बारे में समझाया कैसे जाये?

उत्तरः- ये कार्य आप अपने ही घर से शुरू करें। जैसा कि पहले भी कहा गया है कि जब भी आप अपने घर में अपनी सगी बहन या फिर रिश्ते की बहनों के सामने बैठे हों तो ये 'लव जिहाद' की चर्चा अवश्य ही छेड़ें। चाहे उनको ये बात अच्छी लगे या न लगें। क्योंकि जब मरीज़ डॉक्टर से इलाज करवाता है तो उसको भी कड़वी दवाई अच्छी नहीं लगती। पर वही दवा उस मरीज के भले के लिये होती है। तो इसी प्रकार ये चर्चा आपकी बहनों और बहु-बेटियों के लिए हितकर है। उनके कानों में यह विषय अवश्य ही पहुँचना चाहिये। तो ऐसे

में जब भी रेलगाड़ी या बस में बैठे हुए किसी अजनबी से बातचीत शुरू हो जाये तो उससे भी जानबूझ कर इस विषय में किसी न किसी बहाने से 'लव जिहाद' की चर्चा जरूर छेड़ दें। ताकि वो अपने घर की स्त्रियों की रक्षा के बारे में सचेत हो जाये।

दूसरा मार्ग यह है कि मेरे इस लेख को कम से कम facebook पर हिन्दू लड़कियों के message box में जरूर डाल दें। क्योंकि मान लो इस काम को एक राष्ट्रवादी एक दिन में कम से कम १०० लड़कियों के inbox में ये 'लव जिहाद' वाली प्रश्नोत्तरी को copy paste करे, तो फिर मान लो ऐसे १०० राष्ट्रवादी हों तो एक दिन में कम से कम १०० व्यक्तियों तक यह मैसिज चला जायेगा।

तीसरे आप निम्न बिन्दुओं पर विशेष ध्यान दें-

१. लड़कियां मुस्लिम दुकानों से मोबाईल रिचार्ज न करायें, चूंकि ये दुकानदार लव जेहादियों को नम्बर देते हैं फिर ये करते हैं लड़कियों को फोन।
२. बिना परिवार की सहमति के गैर धर्म में शादी करना दण्डनीय अपराध माना जाये। लव जिहाद के कारण धार्मिक दंगे हो जाते हैं। अतः इसे दण्डनीय माना जाये।
३. लव जिहादियों के लिए कठोर कानून बने, जिससे इस पर रोक लगाई जा सके।
४. इस लेख को कम से कम facebook पर हिन्दू लड़कियों के message box में जरूर डाल दें।

□□□

जिहाद बनाम् आतंकवाद

आप जानते हैं कि आतंकवाद सबसे पहले भारत में कब आया? दसवीं सदी से पहले मौ० कासिम, मौ० गजनवी भारत को लूटने आये। जो अपने देश में सैंकड़ों कुन्टल सोना-चाँदी, हीरे जवाहरात लूटकर ले गये।

यह सब जो आतंकवादी गतिविधियाँ हुई। ये लूट के लिए हुई इसके बाद तो मुगलों ने भारत पर एक के बाद एक हमले किये। देश की संस्कृति को तहस-नहस किया, विश्वविद्यालयों को तोड़ा, वहाँ की बेशकीमती पुस्तकों में आग लगवा दी गयी तथा इस देश में अपना कब्जा जमा लिया। धर्म परिवर्तन के लिए मुगलों ने आर्यों पर जुल्म ढाये। आतंक मचाकर उन्होंने धर्म परिवर्तन कराये ताकि सब मुस्लिम बन जायें। जिससे सब जगह मुस्लिम राज कायम हो सके।

मुस्लिम बादशाहों की बागडोर काजी-मुल्लाओं के हाथ में होती थी तथा आज भी है। ये मुल्ला-मौलवी काजी कुरान का वास्ता देकर सदा से बादशाहों को गुमराह करते आये। ये हमेशा यही कहते आये कि अल्लाह का आदेश है कि मेरे बन्दों की संख्या सबसे अधिक हो, इसलिए सबको मुस्लिम बनाओ, जो न बने उसे तलवार के बल पर मुस्लिम बनाओ। देखिये कुरान कहता है कि- जो नमाज नहीं पढ़ता वह काफिर है, जो मुस्लिम नहीं वह शैतान है, इसलिए गैर मुस्लिम काफिरों-शैतानों

को मुस्लिम बनाओ। इसलिए मुस्लिमों का एक बड़ा वर्ग यह चाहता रहा है कि कैसे भी हो विश्व के लोगों का धर्म परिवर्तित करके उनको मुस्लिम धर्म में लाना चाहिए। कुछ मुस्लिम जो नरम स्वभाव के हैं जो आज भी अच्छे हैं, जिनमें आज भी भारतीयता है। परन्तु जो मुस्लिम धर्म-परिवर्तन को बढ़ावा दे रहे हैं, कुरान को अल्लाह की जुबां कहकर आतंकवादी गतिविधियों में लिप्त हैं या फिर आतंकवादियों को हीरो के रूप में देखते हैं, वो सच्चे मुसलमान नहीं हैं।

हमारा समाज तथा शिक्षित वर्ग इस प्रकार से किये गये धर्म प्रचार को अल्लाह की इस जुबां, कुरान की इस परिभाषा को, आतंक मचानेवाली गतिविधियों को मान्यता नहीं देता तथा ऐसे लोगों को 'आतंकवादी' कहता है।

आज आधुनिक आतंकवाद का कारण क्या है? यह कहाँ से, किसके कारण उत्पन्न हुआ, क्या यह धर्म युद्ध है? या कुछ लोगों का छिपा हुआ व्यापार है, इससे कैसे निपटा जाये आदि बहुत सी बातें हैं। जिनको आज विस्तृत रूप से समझने की जरूरत है, इस पर शोध करने की नितान्त आवश्यकता है।

सबसे पहले तो यह समझना होगा कि जिहाद और आतंकवाद में क्या अन्तर है? धर्म के नाम पर किये जाने वाले विध्वंसकारी कार्यों को एक वर्ग जिहाद का नाम देता है तथा अन्य पूरा विश्व इसे आतंकवाद का नाम देता है। इन दोनों शब्दों में अन्तर किये बिना आतंकवाद पर विस्तृत चर्चा करना व्यर्थ ही होगा। और ना ही हम किसी ठोस निर्णय पर पहुँच सकते हैं। इसको

इस तरह समझ सकते हैं कि जब कहीं कोई भवन गिरता या गिराया जाता है या उसका निर्माण होता है तो वहाँ मलबे का ढेर लगा होता है, लेकिन विध्वंस और निर्माण वाले दोनों मलबों में अन्तर है। अन्तर यह है कि भवन के निर्माण में लगे मलबे का ढेर उसके सकारात्मक उद्देश्य की ओर संकेत करता है, जबकि ढहे हुए भवन का मलबा उसके विध्वंस नकारात्मक उद्देश्य की ओर संकेत करता है। यही अन्तर 'जिहाद' और 'आतंकवाद' का है कि जिहाद भवन निर्माण का द्योतक है और आतंकवाद तोड़-फोड़ और मानवता के विरूद्ध नकारात्मक सोच का प्रतीक है।

अब दूसरी बात यह सोचने की है कि किन लोगों/देशों के कारण आतंकवाद क़ी शुरूआत हुई। किन देशों ने एक सम्प्रदाय विशेष वाले लोगों को उकसाकर आतंकवादी गतिविधियों को इस प्रकार बढ़ावा दिया क़ि आज पूरा विश्व अंगार के ढेर पर बैठा दिया गया। मेरे विचार मे आधुनिक समय में आतंकवाद को हवा देने में सबसे पहले अमेरिका का हाथ है और उन आतंकवादी गतिविधियों से घिरा हुआ सबसे पहला देश भारत है। जबसे ब्रिटिश सरकार ने अपने स्वार्थों के लिए मुस्लिम वर्ग के लोगों पर हाथ रखा या धर्म के नाम पर लोगों को बांटा तथा इस आधार पर राज करने की योजना तैयार की तो वह दिन ही आतंकवादी गतिविधियों का पहला दिन था।

आजादी से आज तक भारत में हजारों छोटी, बड़ी घटनायें हो चुकी हैं। जिसमें ६०-७० हजार बेकसूर लोग मारे जा चुके

हैं हमारे देश में आजादी के बाद आतंकवादी घटनायें निरन्तर बढ़ती ही जा रही हैं।

इन आतंकवादी घटनाओं ने धीरे-धीरे कुछ अन्य देशों के साथ अमेरिका सन् २००१ ई० को अपनी चपेट में ले लिया। वर्ष २००४ में हमारे पूरे देश में २५६५ आतंकवादी घटनायें घटी, जिसमें ७०७ नागरिक तथा २८१ सुरक्षा कर्मी मारे गये। सन् २००५ ई० में ऐसी घटनाओं की संख्या १९९० रही, जिनमें ५५७ नागरिक एवं १८९ सुरक्षाकर्मी शहीद हुए।

ब्रिटिश सरकार ने अप्रत्यक्ष रूप से आतंकवाद के बीज बोये थे तथा अमेरिका जैसे देशों ने इनके उगने के लिए पानी दिया। अमेरिका ने यह सोचकर पानी दिया कि कोई भी देश मुझसे ताकतवर न बने। ऐसा सोचकर पाकिस्तान जैसे आतंकवादी देश को बढ़ावा दिया, अल-कायदा, तालिबान, जैसे आतंकवादी गुटों में, लादेन जैसे हाथों से एक फौज तैयार की। अफगानिस्तान पर आक्रमण किया। अफगानिस्तान के कब्जे में आ जाने पर, इन तालिबानों, अल-कायदा वालों ने रूस देश में आतंकवाद मचाया। रूस के कई टुकड़े कराने का श्रेय अमेरिका देश को जाता है चूँकि अमेरिका नहीं चाहता था कि रूस मेरे सामने ताकतवर बने।

अब इन आतंकवादियों की भी ताकत मजबूत हो गयी। अब इन आतंकवादियों ने जो इस्लाम में अटूट विश्वास रखते थे, पूरी धरती पर अपने धर्म की स्थापना के लिए आतंकवादी गतिविधियों को खूब बढ़ाया। कुछ ने आतंकवाद को व्यापार के

रूप में देखा, तो कुछ ने अपने अन्य स्वार्थों को सिद्ध करने के लिए आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ावा दिया।

आज आतंकवाद उन देशों में फैल गया है जिन्होनें आतंकवाद का सहारा अपने स्वार्थ सिद्ध करने के लिये किया। इन देशों में चाहे पाकिस्तान हो, चाहे अमेरिका, चाहे ब्रिटिश, चाहे कोई अन्य देश। यदि सॉप को दूध पिलाओगे तो एक न एक दिन वह उस पालने वाले को भी डसता है। पाकिस्तान आतंकवादियों की जन्मस्थली है। इस देश ने हमारे देश में भरपूर आतंकवाद को बढ़ावा दिया। इसका कारण धर्म, कुरान वाले सिद्धान्त के साथ-साथ यह भी था कि वह कश्मीर को हथियाना चाहता था, जिसके कारण वह कई बार भारत से हारा। हारने के कारण उसको शर्मिन्दा भी होना पड़ा, इस कारण उसने आतंकवाद को और भी बढ़ावा दिया।

आज आतंकवाद पूरे विश्व में फैल गया है, एवं इससे भारत देश सबसे अधिक ग्रसित है। हमारे देश में आतंकवाद का मुख्य कारण पाकिस्तान, अमेरिका, चीन आदि देश हैं। इन देशों से भी अधिक आतंकवाद का कारण हमारे नेता है, हमारे देश के नेता सबसे बड़े आतंकवादी हैं। मैं सही कहता हूँ नहीं तो देख लेना जिस दिन दाऊद हाथ आ जायेगा उस दिन महाराष्ट्र के बहुत से नेताओं की पोल वह आतंकवादी खोल कर रख देगा। वैसे तो हम गुलाम कश्मीर को, भारत के नक्शे में दिखाकर, अपना बताते हैं लेकिन राज होता है वहाँ पाकिस्तान का, क्यों? भारत सरकार ने उसे आज तक अपने कब्जे में क्यों

नहीं लिया? आज इसी गुलाम कश्मीर में सारी आतंकवादी गतिविधियाँ चलायी जा रही हैं। मेरी सोच ये कहती है कि अलकायदा के बहुत से आतंकवादी वहीं छिपे हुए हैं।

आतंकवाद को समाप्त करने हेतु सर्वप्रथम जनसंख्या पर नियंत्रण करें, दो बच्चों का कानून बने तो परिवार वाले कट्टरपंथियों के कहने पर अपने बच्चों को जिहाद के लिए नहीं देंगे। अधिक बच्चे होने पर एक बच्चे को तो जिहाद के लिए दे देते हैं लेकिन जब एक या दो बच्चे ही होंगे तो अपने बच्चों से प्रेम अधिक होगा तथा कट्टरपंथियों को नहीं सौंपेंगे।

गरीबी में भी व्यक्ति क्राइम की तरफ झुक जाता है कट्टरपंथियों के बहकावे में आ जाता है। अतः शिक्षा द्वारा रोजगार द्वारा परिवार नियोजन जनसंख्या नियन्त्रण कानून द्वारा गरीबी में खत्म करने के उपाय लागू करें।

आतंकवाद व जिहाद के मामले में नेताओं का ढुलमुल रवैया भी आतंकवाद के लिए जिम्मेदार है. जिहाद के विरूद्ध सख्त कानून बने। आतंकी को पनाह देनेवाला भी दोषी माना जाये।

आतंकवाद को खत्म करने के उपाय

१. पूरे देश पर लगी अपनी भारतीय सीमा पर मजबूत जालीनुमा तार बन्दी हो, जिसमें से निकल कर कोई आ न सके।
२. देश की खुफिया एजेन्सियों को सुदृढ़ किया जाये तथा उनको एक सूत्र में बांधा जाये। देश की आन्तरिक सुरक्षा में लगी सी०बी०आई० पर नियन्त्रण राष्ट्रपति का हो जिससे राजनेता

इसका दुरूपयोग न कर सकें। खुफिया एजेन्टों को मजबूत करो, उनको विभिन्न भाषा सिखायी जाये तथा बिना हथियार लड़ना सिखाया जाये, विज्ञान की नई-नई टैक्नीक सिखाओ। खुफिया एजेन्सियों पर बजट दुगना करो।

३. आम आदमी को खुफिया सूचना देने के लिये अपने समूह में सम्मिलित किया जाये। खुफिया एन०जी०ओ० तथा प्राईवेट डिक्टेटिव एजेन्ट को देश में बढ़ावा दो तथा प्रत्येक गांव में एक खुफिया एजेण्ट तैयार करो। केन्द्र सरकार यह भी कर सकती है कि प्रत्येक गांव से नौजवान सेना में, पुलिस में तो हैं ही उन्ही को सहायक खुफिया एजेण्ट के रूप में प्रयोग कर सकती है।

४. पाक अधिकृत कश्मीर में सैनिक कार्यवाही होनी चाहिए वहां चल रहे आतंकी शिविर नष्ट किये जाने चाहिए तथा शेष कश्मीर को वापस लेना चाहिए।

५. पाकिस्तान के चमचों, हुर्रियत कांफ्रेस नेताओं की हमारे देश में क्या जरूरत है? हमारे भ्रष्ट नेताओं ने ही तो ये पाल रखे हैं। खुफिया तन्त्र इनको गोली से क्यों नहीं उड़ा देता है।

६. हमारी भारतीय सीमा को 'जीयो स्टेशनरी जासूसी सैटेलाइट' के माध्यम से सुरक्षित किया जाये, जो कि सीमाओं के अन्दर आने जाने वालों की हलचल पर निगाह रखे।

७. पूरे विश्व के मुस्लिमों को दी जानेवाली शिक्षा पर विचार करना चाहिए। मुल्ला, मौलवियों, मदरसों में दी जाने वाली कट्टरता फैलानेवाली शिक्षा पर भी रोक लगानी होगी।

८. हमारे देश में हमारे नेता भी आतंकवाद के लिए जिम्मेदार हैं इसलिये इसके लिये भी जनक्रान्ति की आवश्यकता है। जनता को आवाज उठानी होगी इन नेताओं के खिलाफ चूंकि हर समस्या का कारण ये हमारा भ्रष्ट राजतन्त्र ही है। देखो चीन में थोड़ा सा भी आतंकवाद नहीं है चूंकि वहां की राजनीति के नियम कठोर हैं, वहाँ की सरकार के नियम कानून देश हित में हैं, हमारे नेताओं की तरह अपने स्वार्थ में नहीं हैं। आज यदि सरकार चाहे तो आतंकवाद खत्म हो सकता है।

९. हिंसा या आतंकवाद का सम्बन्ध मानसिकता से है जब तक इस सोच और नकारात्मक मानसिकता को बदलने के लिये कोई सकारात्मक कोशिश नहीं होगी तब तक केवल कानून बनाने से यह ममस्या खत्म नहीं होगी।

आतंकवादी गतिविधियों से भारतीय मुस्लिम भी अछूते नहीं रह गये। इसलिये ऐसे लोगों की सोच बदलने के लिये आतंकवाद की वैचारिक लड़ाई लड़ने के लिये हमें मुल्ला-मौलवियों को बड़ी संख्या में तैयार करना होगा जो मुस्लिमों को एक नयी सोच देगें। कुरान के शैतान, काफिर जैसे शब्दों का सही मतलब बतायेंगे, मदरसों में विज्ञान आदि की नई शिक्षा नीति के लिए क्रान्तिकारी विचार फैलायेंगे।

१०. आतंकवाद से सम्बन्धित कानूनों का यदि दुरूपयोग हुआ है तो जरूरत है दुरूपयोग को रोकने की, न कि कानूनों को बदलने की।

११. आज समय की मांग है कि प्रत्येक धर्म, पन्थ की उन कमजोरियों को दूर किया जाये जो किसी न किसी रूप में कट्टरता और आतंकवाद को बढ़ावा देती हैं।

१२. आतंकवाद निरोधक समाज सेवी संस्थाओं (एन.जी.ओ.) को बढ़ावा देना होगा।

१३. सेना को खुली छूट देनी होगी। सेना से कहा जाना चाहिए कि हमें एक साल के अन्दर-अन्दर आतंकवाद मुक्त राष्ट्र दो। यदि ये हमारे नेता चाहें तो हमारी सेनायें राष्ट्र को आतंकवाद से मुक्ति दिला सकती हैं। लेकिन ये भ्रष्ट नेता चाहते ही नहीं कि हमारे देश से आतंकवाद खत्म हो, क्योंकि इसमें इनके स्वार्थ छिपे हुए हैं।

१४. पाकिस्तान के नागरिकों पर भारत में आने पर रोक लगायें।

१५. विश्व स्तर पर पाकिस्तान को आतंकवादी देश घोषित कराया जाये।

□□□

जिहाद बनाम् कट्टरवाद

इस लेख को लिखने मे मेरा किसी भी धर्म का विरोध करने का कोई उद्देश्य नहीं है। अपितु यह लेख इस्लाम के प्रचार के लिए है। कुरान मुसलमानों का मजहबी ग्रन्थ है, मुसलमानों के अलावा इसका ज्ञान गैर मुस्लिमों को भी होना आवश्यक है।

मानव एकता और भाईचारे के विपरीत कुरान का मूल तत्व और लक्ष्य इस्लामी एकता व इस्लामी भाईचारा है। गैर मुसलमानों के साथ मित्रता रखना कुरान में मना है, कुरान मुसलमानों को दूसरे धर्मों के विरूद्ध शत्रुता रखने का निर्देश देती है। कुरान के अनुसार जब कभी जिहाद हो, तब गैर मुस्लिमों को देखते ही मार डालने का आदेश मौजूद है।

कुरान में मुसलमानों को केवल मुसलमानों से ही मित्रता करने का आदेश है। देखिये सुरा ३ की आयत ११८ में लिखा है कि- 'अपने मजहब के लोगों के अतिरिक्त किन्ही अन्य लोगों से मित्रता मत करो।' लगभग यही बात सुरा ३ की आयत २७ में भी कही गई है, 'इमां वाले मुसलमानों को छोड़कर अन्य किसी भी काफिर से मित्रता न करो।'

कुरान की लगभग १५० से भी अधिक आयतें मुसलमानों को गैर मुसलमानों के प्रति भड़काती हैं। सन् १९८४ ई० में हिंदू महासभा के दो कार्यकर्ताओं ने कुरान की २४ आपत्तिजनक आयतों का एक पत्रक छपवाया था। उस पत्रक को छपवाने पर

उनको गिरफ्तार कर लिया गया। परन्तु कोर्ट ने उनको ससम्मान रिहा करते हुए फैसला* दिया कि-

'कुरान मजीद का आदर करते हुए इन आयतों के सूक्ष्म अध्ययन से पता चलता है कि ये आयतें मुसलमानों को गैर मुसलमानों के प्रति द्वेषभावना भड़काती है........' उन्हीं आयतों में से कुछ आयतें नमूने के तौर पर नीचे दी जा रही हैं, देखिये-

सुरा ९ आयत ५ में लिखा है, ... फिर जब पवित्र महीने बीत जायें तो मुश्रिकों अर्थात् मूर्तिपूजकों को जहाँ कहीं पाओ कत्ल करो और उन्हें पकड़ो व घेरो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो। यदि वे तोबा कर लें नमाज कायम करें, और जकात दें तो उनका रास्ता छोड़ दो। निसंदेह वह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है, और देखिये-

सुरा ९ की आयत २३ में लिखा है कि- 'हे ईमानवालों अपने पिता व भाईयों को अपना मित्र न बनाओ, यदि वे ईमान की अपेक्षा कुफ्र को पसंद करें, और तुममें से जो उनसे मित्रता का नाता जोड़ेगा तो ऐसे ही लोग जालिम होंगे।'

इस आयत में नव प्रवेशी मुसलमानों को साफ आदेश है कि जब कोई व्यक्ति मुसलमान बने तो वह अपने माता, पिता,

---

* इस कोर्ट के फैसले का पूरा विस्तार से वर्णन जानने के लिए प्रकाशन से सम्पर्क करें, क्योंकि इसे पुस्तककार अलग से भी प्रकाशित किया गया है।

- अतुल गुप्ता (व्यवस्थापक)
विक्रय विभाग, अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

भाई सभी से सम्बन्ध समाप्त कर ले। यही कारण है कि जो एक ार मुसलमान बन जाता है, वह अपने परिवार के साथ-साथ अपने राष्ट्र से भी कट जाता है।

सूरा ३२ की आयत २२ में लिखा है- 'और उनसे बढ़कर जालिम कौन होगा जिसे उसके रब की आयतों के द्वारा चेताया जाये और फिर भी वह उनसे मुँह फेर ले। निश्चय ही ऐसे अपराधियों से हमें बदला लेना है।'

सूरा २६ आयत ९४ .... 'तो वे गुमराह (बुत व बुतपरस्त) औन्धे मुहँ दोजख (नरक) की आग में डाल दिए जायेंगे।'

गैर मुसलमानों को समाप्त करने के बाद उनकी संपत्ति, उनकी औरतों, उनके बच्चों का क्या किया जाए? उसके बारे में कुरान, मुसलमानों को कहता है कि-

उसे अल्लाह का उपहार समझकर उसका भोग करना चाहिए, देखिये-

सूरा ४८ आयत २० में कहा गया है, ... 'यह लूट अल्लाह ने दी है।'

सूरा ८ आयत ६९ .... 'उन औरतों का जिन्हें तुमने युद्ध करके लूट के रूप में प्राप्त किया है, पूरा भोग करो।'

सूरा १४ आयत १३ .... हम मूर्ति पूजकों को नष्ट कर देंगे और तुम्हें उनके मकानों और जमीनों पर रहने देंगे।'

सूरा ४ आयत २४ .... 'विवाहित औरतों के साथ विवाह हराम है, परन्तु युद्ध में माले-गनीमत के रूप में प्राप्त की गई औरतें तो तुम्हारी गुलाम हैं, उनके साथ विवाह करना जायज है।'

अल्बुखारी की हदीस जिल्द ४ सफा ८८ में मौहम्मद ने स्वयं कहा है कि- 'मेरा गुजर लूट पर होता है।'

अल्बुखारी की हदीस जिल्द १ सफा १९९ में मौहम्मद कहता है- 'लूट मेरे लिये हलाल कर दी गई है, मुझसे पहले पैगम्बरों के लिए यह हलाल नहीं थी।'

इस्लाम का सबसे महत्वपूर्ण मिशन पूरे विश्व को दारूल इस्लाम बनाना है। कुरान, हदीस, हिदाया सीरतुन्नबी इस्लाम के बुनियादी ग्रन्थ हैं इन सभी ग्रंथो में मुसलमानों को दूसरे धर्म वालों के साथ क्रूरतम् बर्ताव करके उनके सामने सिर्फ इस्लाम स्वीकार करना अथवा मृत्यु ये दो ही विचार रखने होते हैं। हमारी सरकार उन्हें आज जहाँ पढ़ाई के लिए १०० करोड़ दे रही है वहां की पढ़ाई पर भी एक नजर डालनी जरूरी है, देखिये-

आप लोगों को पता लगा होगा कि हमारी सरकार ने अभी मदरसों की पढ़ाई के लिये १०० करोड़ रुपये देने की बात कही है, वहां क्या पढ़ाया जाता है वह पूरे मानव समाज को इसकी जानकारी होनी चाहिए, की मदरसे में जिस कुरान को पढ़ाया जाता है वहाँ उसके माध्यम से बच्चों को क्या सिखाया जा रहा है?

यह आयत है सूरा अन्फाल आयत ६५ का अर्थ जिसमें लिखा है- 'ऐ नबी ईमान वालों को जिहाद का शौक दिला, अगर तुममे २० भी सबर वाले होंगे तो वह १०० पर गालिब रहेंगे, और अगर तुम एकसौ, होंगे तो एक हजार काफिरों पर गालिब (भारी) रहेंगे, इस वास्ते कि वे बे-समझ लोग हैं।'

नोट- माननीय प्रधानमंत्री जी को यह उपरोक्त वर्णित कुरान के आदेश का पता है या नहीं, मुझे नहीं मालूम पर कुरान में अल्लाह का फरमान क्या है? उस पर अवश्य ध्यान दें।

अब आप लोग अच्छी प्रकार से सोच सकते हैं कि भारतवासियों का १०० करोड़ रुपया खर्च करने के बाद उस मदरसे में क्या पढ़ाया जा रहा है, जिसे पढ़कर वो बच्चे निकलेंगे? जो आज ईराक में देखने को मिल रहा है, यही वह कुरानी शिक्षा है जिसमें अमल कर रहे वही तालिबान, हिजबुल मुजाहिद्दीन, अलकायदा, हाफिज सईद का संगठन आदि। एक नहीं और भी बहुत सी आयतें हैं जिन पर गौर करना बहुत जरूरी है। उनका विवरण विस्तारपूर्वक पहले दिया जा चुका है।

श्रीमान प्रधानमंत्री जी आपके द्वारा दिये गये १०० करोड़ रुपये पाकर जब यह लड़के उस मदरसे में पढ़कर निकलेंगे, तो आपका रास्ता घेरेंगे और जकात के लिए नमाज के लिए आप से कहेंगे, अगर आप नहीं करते हैं तो आपको कत्ल करेंगे। यह सारा काम अल्लाह के हुकुम से ही होगा। और यह हुकुम उन्हें मिला कहाँ से? उसी मदरसे से जिसके लिए आपने १०० करोड़ रुपया दिया है।

आगे देखिये अल्लाह का फरमान?

कुरान में कहा है कि- 'उनसे तुम जंग करो अल्लाह ताला उन्हें तुम्हारे हाथों अज़ाब देगा, उन्हें जलील और रूसवा करेगा तुम्हें उन पर मदद देगा और मुसलमानों के कलेजे ठन्डे करेगा।'

(सूरा तौबा आयत १४)

नोट- आपके १०० करोड़ देने की भी ख्वाहिश नही, अल्लाह ने उन्हीं मदरसे वालों को सिखाया कि- तुम उनसे जंग करो, मुसलमानों के हाथों अल्लाह अजाब दिलायेंगे और ज़लील भी करवायेंगे। भले ही आपने १०० करोड़ दिये हों आपकी बात वहाँ मान्य नहीं, किन्तु अल्लाह ने जो हुक्म उन्हें दिया है, उसी मदरसे से जो सबक उन्हें मिला है, उसी के अनुसार ही सारा काम होना है, क्या आप उस वक्त बता सकेंगे, कि बेटे मैंने ही तुम्हारे पढ़ने की सुविधा मुहैया कराई थी? कम से कम मुझे तो बख्श दो, हमारे जेटली साहब पर तो तनिक दया करो?

नोट- यह साफ साफ अल्लाह का फरमान है जो उसी मदरसे में बैठ कर उस शिक्षार्थी को वर्षों सीखना पड़ेगा, और वहां से निकलने के बाद आप खुद सोचिये कि वह उस दिमाग में भरे गये नक्शों से काम करेगा अथवा भारत के मानचित्र के अनुसार काम करेगा? यह एक अहम् प्रश्न है। देखो कुरान साफ लफ्ज़ों में कहता है कि-

'जो लोग ईमान लाये हिजरत कि अल्लाह की राह में, अपने माल और अपनी जान से जिहाद किया वह अल्लाह के यहाँ बहुत बड़े मर्तबे वाले हैं और यही लोग मुराद पाने वाले हैं।'

(कुरान सुरा तौबा आयत २०)

'काफिरों से लड़ते रहो, यहां तक कि फसाद बाकी न रहे, और सब जगह खुदा ही का दीन हो जावे।'

(कुरान पारा ९ सूरे अन्फाल रूकू ५ आयत ३१)

किताब वाले जो न खुदा को मानते हैं और न कयामत को और न अल्लाह और उसके पैगम्बर की हराम की हुई चीजों को हराम समझते हैं और न सच्चे दीन को मानते हैं, उनसे लड़ो यहाँ तक कि जब तक जलील होकर अपने हाथों से जजिया (कर) न दें।

(कुरान पारा १० सूरे तोबा रूकू ४ आयत २१)

इस अध्याय में कट्टरवाद के कुछ उदाहरण बतौर नमूने के पेश किये गये हैं जो शतप्रतिशत सत्य हैं। जब तक यह कुरान की शिक्षा मौजूद रहेगी, तब तक मेरा दावा है कि मुस्लिम सम्प्रदाय के बीच से जिहाद बनाम कट्टरवाद का समाप्त होना नामुमकिन तो नहीं, हां मुश्किल अवश्य है।

अतः उसके लिए हमें इस कुरानी शिक्षा पद्यति को जड़मूल से समाप्त करना होगा, तथा उसकी जगह पर वैदिक शिक्षा की स्थापना करनी होगी। जो खुद उन मुसलमानों के लिए ही नहीं, अपितु देश और समाज के लिए भी हितकर सिद्ध होगी।

□□□

जिहाद के विभिन्न रूप

फिल्मी संस्कृति रूपी जिहाद

आज फिल्मों नाटको के माध्यम से गैर मुस्लिमों को नीचा दिखाने की कोशिश की जाती है। फिल्मों में प्राचीन इतिहास को तोड़ मरोड़ कर पेश किया जाता है। ताकि हिन्दुओं में हीन भावना आये तथा मुस्लिम जिहाद के लिए प्रेरित हों, उदाहरणत: फिल्मों में अधिकतर नायकों को ही मुस्लिम धर्म से तथा नायिका को हिन्दू धर्म से जोड़कर दिखाते हैं।

यदि फिल्म में नायक नायिका को अलग अलग धर्म से दिखाना हो तो यह हॉलीवुड फिल्मों में ही है जहां पाकिस्तान में बैठे दाऊद जैसों का धन इस फिल्म इंडस्ट्री में लग रहा है। इसमें लव जिहाद की प्रेरणा तो देने ही हैं ये कट्टरपंथी साथ ही पाकिस्तान या मुस्लिम देशों में फिल्म की आमदनी बढ़ाने का भी इनका मकसद होता है। दो दो फायदे धर्म को बढ़ावा भी व धन की आमदनी भी।

इतिहास से छेड़छाड कर हिन्दुओं में हीनभावना पैदा करना व मुस्लिम धर्म को बढ़ावा देना भी कट्टरपंथियों का मकसद होता है। हाल ही में कई फिल्मों में ऐसा करने की कोशिश हुई है। जैसे पद्मावती का प्रेम प्रसंग अलाउद्दीन से दिखाने की कोशिश की जाने पर जनता ने विरोध किया तो उल्टे मीडिया ही विरोध करने वालों से सवाल पूछने लगी, लेकिन फिल्मवालों

से एक बार भी नहीं पूछा गया कि आप ऐसी छेड़छाड़ इतिहास के साथ क्यों कर रहे हैं।

श्रीकृष्ण सीरियल में श्रीकृष्ण की दो पत्नियाँ दिखाई गई हैं जो कि हमारी संस्कृति को गलत ढंग से प्रस्तुत करती हैं। इसका कानूनन विरोध होना चाहिए।

देश में यदि अल्पसंख्यकों के बारे में किसी ने कुछ कहा तो मीडिया बहुत बड़ी खबर बना देती है। लेकिन बहुसंख्यकों के साथ बंगाल, केरल आदि राज्यों में बहुत सी अप्रिय घटनाएँ घटित हुई लेकिन मीडिया चुप रहती है, आखिर ऐसा क्यों? जबकि हमारी मीडिया को तो चाहिये कि जो हमारे देश व समाज के हित में हो, उसमें पूर्ण रूप से सहयोग देकर उसका प्रचार-प्रसार करें।

लैण्ड रूपी जिहाद का सच

मुस्लिम संगठनों द्वारा मुस्लिमों को प्रेरणा दी जाती है कि कस्बों, शहरों, गाँवों के मुख्य रास्तों के साथ बाहर की तरफ जमीन खरीदें, वहां रहें ताकि गैर मुस्लिमों पर चारों ओर से दबाव बनाया जा सके। गैर मुस्लिमों के मकान मुस्लिमों में न हों लेकिन गैर मुस्लिमों में मुस्लिम घर लें, उनसे आना-जाना जारी रखें, ताकि अपने मकसद में कामयाब हुआ जा सके।

धर्मगुरू रूपी जिहाद की असलियत

यह कार्य भी जिहाद का एक हिस्सा है, कि गैर मुस्लिमों विशेषकर हिन्दुओं के धर्मगुरूओं को बदनाम करो, ताकि जो

लोग विभिन्न गुरूओं में आस्थामान हैं उनकी आस्था हटे। जब आस्था गुरूओं में नहीं रहेगी तो आत्मिक बल कम होगा, तो धर्म में भी आस्था कम हो जायेगी, तो ऐसे लोगों का धर्म परिवर्तन आसानी से कराया जा सकता है।

सबसे बड़ा फायदा इनको यह है कि गुरूओं के माध्यम से उन्हें हिन्दू धर्म पर तंज कसने का मौका मिल जाता है।

धर्म परिवर्तन रूपी जिहाद का सच

इस्लाम को मानने वालो छदम् जिहाद मे इस्लाम की बदनामी हो रही है, ऐसे कट्टरपंथियों, आतंकवाद विचारधारा वालों, लवजिहाद की प्रेरणा देने वालों या जनसंख्या बढ़ाकर गज़्बा-ए-हिन्द अर्थात् भारत का इस्लामीकरण करने की बात को कहने वालों का विरोध करें।

- चाहे अमेरिका में वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर धवस्त करने वाली घटना हो, चाहे स्पेन एवं मिश्र में बम विस्फोट, भारत में अहमदाबाद के अक्षरधाम व जम्मू के रघुनाथ मन्दिर और अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर आतंकवादी हमला तथा भारतीय संसद एवं कश्मीर की विधानसभा जैसे संवैधानिक स्थलों पर हमला, ये सभी कृत्य जिसमें हजारों लोगों की हत्या की गई, इसी जिहाद की प्रेरणा के परिणाम हैं।
- जिहादी तैयार करने के लिए पाकिस्तान व कश्मीर के इस्लामिक मदरसों में ट्रेनिंग सेन्टर चलाए जा रहे हैं। भारत में हजारों इस्लामिक मदरसों में बहुतायत संख्या में जिहादी तैयार हो रहे हैं।

- इस घिनौनी शिक्षा का कोई सेक्युलर दल न तो विरोध करता है और न ही उसे बदलने का आग्रह करता है। बल्कि धार्मिक शिक्षा अर्थात् 'पाक कुरान की शिक्षा कहकर उसका समर्थन करते हैं।'
- कश्मीर की धारा ३७० हमारे सेक्युलर नेताओं की ही देन है। इसके परिणामस्वरूप वहाँ पर आतंकवाद, अलगाववाद और जिहाद भारत की एकता और अखण्डता के लिए भयंकर परेशानी का सबब बना हुआ है।
- लाखों निर्दोष नागरिक एवं सैनिक और अरबों खरबों की सम्पत्ति इस इस्लामिक जिहाद की भेंट चढ़ गई है।
- हमारे सेक्युलर राजनीतिक नेता संसद में बैठकर 'कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है' का संकल्प व प्रस्ताव पारित करते हैं। और अलगाववाद की जननी धारा ३७० को हटाने का विरोध करते हैं, यह है सेक्युलर राजनीति का दोहरा चरित्र!
- असम सहित उत्तर पूर्वांचल के सभी राज्यों में आतंकवाद व अलगाववाद को जन्म देने व उसका पोषण करने का काम चर्च ही कर रहा है।

  चर्च की शिक्षा व पादरियों की भारत विरोधी प्रवृत्ति के परिणामस्वरूप वहाँ के विद्यालयों से निकलने वाले नवयुवक आतंकवाद और अलगाववाद की गतिविधियों में बढ़-चढ़ कर भाग ले रहे हैं और चर्च उनकी सब प्रकार से सहायता करता है।

- भारत सरकार तथा सेक्युलर दल वहां के अलगाववादी संगठनों के नेताओं से विदेशों में जाकर वार्ता करके उनको हीरो बना रहे हैं।
- त्रिपुरा में ईसाई बने उग्रवादी हिन्दू गाँवों में जाकर ए०के०४७ व ए०के० ५६ रायफल का भय दिखाकर हिन्दुओं को ईसाई बनने के लिए मजबूर कर रहे हैं।
- कश्मीर, नागालैण्ड, त्रिपुरा को पूर्णरूप से कभी भी सेना के सुपुर्द नहीं किया गया है, जब कभी इसकी मांग उठी भी तो वोट की राजनीति और तुष्टीकरण की सेक्युलर मनोवृत्ति आड़े आ गई। सम्पूर्ण सेक्युलर खानदान एकजुट होकर उसका विरोध करने लगा। इसी कारण सारे देश में जिहादी आतंकवाद की फसल सेक्युलर शक्तियों के संरक्षण में फल-फूल रही है।

जिहाद बनाम धर्मस्थानों का अधिग्रहण

सेक्युलरवादी राजनेताओं ने भारतीय अस्मिता और भावना के प्रतीक प्राचीन मंदिरों को पुरातत्व स्मारक परिभाषित कर उन्हें अजायबघरों में बदल दिया है।

हजारों प्राचीन मंदिर पूजा के लिए बंद कर दिए गए हैं। वहाँ के अधिष्ठाता देवता अब पूजा के लिए नहीं हैं बल्कि कला के उत्कृष्ट नमूने बन गए हैं। यह भारत की संस्कृति को समाप्त करने का सबसे बड़ा षड़यंत्र चल रहा है।

ब्रिटिश शासकों की नीति को लेकर चलने वाली सेक्युलर राजनैतिक शक्तियाँ एक प्रकार से यही कार्य कर रही हैं।

आश्चर्य की बात है कि सरकार न तो किसी मस्जिद को अपने नियंत्रण में लेती है और न ही किसी चर्च को, यहां तो केवल सभी प्रदेशों में हिन्दुओं के मन्दिरों को ही सरकारी नियंत्रण में लिया जा रहा है और अनेक स्थानों पर तो इन सरकारी प्रबंध समितियों में गैर हिन्दुओं को भी शामिल किया जाता है।

आज दक्षिण भारत के एक लाख से ऊपर मंदिर सेक्युलर सरकारों ने अधिग्रहण किये हुए हैं, और उत्तर भारत के सभी समृद्ध मंदिर अधिग्रहीत हैं। मंदिरों का हजारों करोड़ों रूपये का चढ़ावा उन कामों के लिए खर्च किया जाता है जिनके लिए श्रद्धालु उसे नहीं चढ़ाते।

धर्मान्तरण रोकने के लिए एक पाई भी काम में नहीं आती, एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि मंदिर भारतीय जीवन पद्धति की रीढ़ रज्जु है।

सेक्युलरवादी एक लंबे षड्यंत्र के तहत इस रीढ़ रज्जु को तोड़ देना चाहते हैं। इसकी रक्षा, संरक्षण, विकास का कार्य साधु-सन्तों को हिन्दू संस्कृति में श्रद्धा रखने वालों को, दृढ़तापूर्वक करना होगा।

जिहाद का एक नया रूप

जिस प्रकार मंदिर हिन्दू जीवन की रीढ़ रज्जु है उसी प्रकार धर्माचार्य सन्त-महापुरूष संपूर्ण भारत की भावनात्मक एकात्मता के सेतु स्तंभ हैं। इन धर्माचार्यों को प्रताड़ित करना भी जिहाद के नाम पर की गई एक सोची-समझी चाल है। इन धर्माचार्यों

ने देश भर में निरंतर प्रवास करते हुए अत्यंत भीषण परिस्थितियों में भी राष्ट्र को एक सूत्र में बांधे रखा। धर्माचार्य भारत की आध्यात्मिकता के भी प्रहरी हैं। और उसकी राष्ट्रीयता के भी। विभिन्न अखाड़ों ने मुगल शासन के अत्याचारों से लोहा भी लिया था। यही कारण है कि इस्लाम और चर्च के इतने लंबे अत्याचारी शासनकाल के बावजूद भी हिन्दुस्थान, हिन्दू स्थान ही बना रहा, यूनान मिश्र और रोम की तरह मिट नहीं गया। **'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी'**, में जिस **'कुछ बात'** की चर्चा है। वह **'कुछ बात'** ये सन्त-महंत-धर्माचार्य और मठ मन्दिर ही तो हैं।

आज भी भारत की तथाकथित सेक्युलर शक्तियां उसी डगर पर चली हुई हैं। कांचीमठ के शंकराचार्य की गिरफ्तारी की यही पृष्ठभूमि है। क्योंकि सन्तों-धर्माचार्यों के अपमानित होने और अप्रासंगिक बनने से भारतीय समाज स्वत्वहीन होता है और सेक्युलर राजनेता यही चाहते हैं।

हिन्दू आचार संहिता में सेक्युलर हस्तक्षेप

भारत की वर्तमान न्याय व्यवस्था अंग्रेजों द्वारा बनाई गई न्याय प्रणाली पर आधारित चली आ रही है। अंग्रेजों ने तो इसका निर्माण भारतीयों में फूट डालने और भारतीयों को सदा के लिए गुलाम बनाए रखने के लिए किया था।

देश में प्रचलित सिविल कानून और फौजदारी कानून तो लोकतांत्रिक चेतना के विपरीत हैं, और इन्हें विदेशी शासन का भय बनाये रखने के लिए निर्मित्त किया गया था। आश्चर्य की

बात है कि अंग्रेजों के चले जाने के बाद भी सरकारें उसी को ढो रही हैं। इसी प्रकार हिन्दू कोडबिल बनाकर शासन हिन्दुओं की पारिवारिक व्यवस्था में दखलअंदाजी कर रहा है, जबकि मुस्लिम पर्सनल लॉ को उसे छूने से भी भय लगता है कि कहीं सेक्युलर चेहरा खराब न हो जाए।

सेक्युलरवादियों द्वारा विकृत इतिहास का पठन-पाठन

भारत में आज सेक्युलरवादी शक्तियां भारतीय इतिहास को केवल विकृत करने का प्रयास ही नहीं कर रही हैं, बल्कि उसे कपोल कल्पित घोषित करने का प्रयास भी हो रहा है।

यूरोपीय इतिहासकार इतिहास का प्रारंभ ईंसवी से पहले या बाद के समय को ही मानते हैं। उनके लिए ईसा मसीह ही एक ऐसा खूंटा है जिससे नापे बिना उनका काम चल ही नहीं सकता, जबकि भारत में पुराण शैली में इतिहास रचना पिछले लाखों सालों से मिलती है। परंतु यह शैली यूरोपीय इतिहास लेखन शैली से मेल नहीं खाती है इसलिए यूरोपीय इतिहासकारों ने भारत के प्राचीन इतिहास को या तो कपोल कल्पना करार दिया है या फिर उसे साहित्यिक काव्य की दृष्टि में पले बढ़े सेक्युलरवादी तथा कम्युनिस्ट भारतीय इतिहासकार भी देश के प्राचीन इतिहास को कल्पना से ज्यादा नहीं मानते, उन्होंने राम और कृष्ण को ऐतिहासिक पुरूष न मानकर उन्हें काल्पनिक नायक घोषित कर दिया है।

अब इतिहास की पाठ्य किताबों में राम, कृष्ण और अन्य ऐतिहासिक महापुरूषों को काल्पनिक लिखने में कम्युनिस्ट इतिहासकार और सेक्युलर राजनेता जुटे हुए हैं।

पश्चिमी बंगाल सरकार ने इतिहास की पुस्तकों में से वे सभी संदर्भ हटाने के निर्देश दिये हैं। जिनमें इस्लामी शासन काल के अत्याचारों का वर्णन किया गया है। शायद सरकार ये मानकर चलती है कि जब राम और कृष्ण ऐतिहासिक पुरूष ही नहीं थे तो उनकी जन्म भूमि का प्रश्न ही कहां पैदा होता है? यह सारा खेल अंतर्राष्ट्रीय शक्तियों के नेतृत्व में भारत को भारत न रहने देने के लिए एक भयंकर सेक्युलर षड़यंत्र है।

सेक्युलरवादियों द्वारा धर्मान्तरित अनुसूचित बन्धुओं हेतु आरक्षण

पिछले कुछ अर्से से देश में अनुसूचित जाति के नाम पर एक भयानक षड़यंत्र* चल रहा है। जिसका पहला मकसद है कि अनुसूचित जाति को समाज की मुख्य धारा से तोड़कर उन्हें ईसाई या मुसलमान बनाना।

इस धर्मान्तरण अभियान में इन षड़यंत्रकारी शक्तियों का सबसे धारदार हथियार है कि हिन्दू समाज के भीतर अनुसूचित जाति के साथ अस्पृश्यता और भेदभाव का व्यवहार किया जाता

---

* विस्तृत जानकारी के लिए देखें- 'वर्तमान भारत में भयानक राजनीतिक षडयन्त्र : दोषी कौन?' जिसे इतिहास विद् रिसर्चस्कालर श्री राकेश कुमार आर्य, एडवोकेट द्वारा लिखा गया है।

- लेखक

है। लेकिन ईसाईयत और इस्लाम समाज का आधार मनुष्य-मनुष्य में भेदभाव और अस्पृश्यता नहीं है। ये दोनों समाज़ समानता पर आधारित हैं। इसलिए हिन्दू अनुसूचित जाति को इस नये मुस्लिम समाज में आना चाहिए।

इस तर्क के आधार पर अनुसूचित जाति को मुसलमान और ईसाई बनाया जा रहा है। इस तर्क का अर्थ यह निकला कि जो अनुसूचित जाति का व्यक्ति मुसलमान या ईसाई बन जाता है, वह न तो अनुसूचित जाति का ही रह पाता है और ना ही प्रताड़ित का।

- पाकिस्तान के नेताओं ने जब पाकिस्तान को इस्लामी राष्ट्र के रूप में घोषित किया तो भारतीय नेताओं ने भारत सेक्युलर अर्थात् धर्मनिरपेक्ष है, यह घोषित करना आरम्भ किया।
- सेक्युलर मान्यता धारण करने से हर बार यह सिद्ध करना पड़ा कि हम मुसलमान विरोधी व हिन्दू पक्षपाती नहीं हैं।
- इस मान्यता के परिणामस्वरूप सत्ताधारियों का आचरण क्रमशः हिन्दू विरोध तथा मुस्लिम और अल्पसंख्यक पक्षपाती बनता चला गया।
- ऐसी अल्पसंख्यक संरक्षण की परिसीमा उचित, अनुचित सभी विषयों को छोड़कर सेक्युलर के नाम पर अल्पसंख्यकों का पक्ष तथा बहुसंख्यकों के विरोध में बदल गयी।
- यथार्थ में सेक्युलर स्टेट यह भारतीय संविधान में कहीं नहीं था। एक बार सर्वोच्च न्यायालय के रिटायर्ड न्यायाधीश को०का० सुब्बाराव ने जब यह सत्य प्रकट किया, तब

श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने आपातकाल के समय सन् ७५-७६ में संविधान में संशोधन कर सेक्युलर स्टेट शब्द डाला।

- सेक्युलर का व्यवहारिक अर्थ हिन्दू विरोधी हो गया है।
- सर्वत्र सेक्युलर दल ईसाई एवं मुस्लिमों का समर्थन कर रहे हैं।
- संविधान के अनुसार अनुसूचित जाति हिन्दू समाज के अंग हैं, मुस्लिम एवं ईसाई यह कहते रहे हैं कि हमारे यहां किसी भी प्रकार का भेदभाव या ऊँच-नीच नहीं है। अनुसूचित जाति यह हिन्दू समाज व्यवस्था की विकृति है।
- ईसाई लोग दलितों के ईसाईकरण में लगे हुए हैं। छः करोड़ क्रिप्टो क्रिश्चन आज हिन्दूनाम, हिन्दूजाति धारण कर हिन्दू दलितों के पेट पर लात मारकर सुविधाएँ भोग रहे हैं।
- सर्वोच्च न्यायालय में क्रिश्चन अनुसूचित जाति के अधिकार का विषय चल रहा है। उसका निर्णय आने पर सच्चाई सामने आयेगी। सेक्युलर दलों ने पिछले दिनों ईसाई जनजातियों की सुविधाएँ समाप्त करने की माँग का विरोध किया था।
- ईसाई बने दलितों को भी आरक्षण का लाभ मिलना चाहिए, यह मांग सेक्युलर दल कई बार उठा चुके हैं।
- भारतीय संविधान में अनुसूचित जाति की सामाजिक व आर्थिक उन्नति के लिए अनेक स्थानों पर आरक्षण की व्यवस्था की गई, इस आरक्षण का मूलभूत आधार भी यही है कि हिन्दू समाज में अनुसूचित जाति के साथ भेदभाव

किया जाता है। परन्तु अब एक व्यापक अंतर्राष्ट्रीय षड़यंत्र के तहत यह मांग की जा रही है और जो अनुसूचित जाति के लोग मुसलमान या ईसाई बन गए हैं उन्हें भी आरक्षण दिया जाए।

- मुख्य प्रश्न यह है कि जब ईसाई और इस्लामी समाज में कोई अनुसूचित जाति है ही नही, वहां सब बराबर हैं। और किसी के साथ किसी प्रकार का भेदभाव भी नहीं किया जाता, तो आरक्षण किसको दिया जाए? लेकिन भारत में धर्मांतरण का आंदोलन चलाने वाली ये शक्तियां जानती हैं कि एक बार धर्मान्तरित अनुसूचित जाति को भी आरक्षण का लाभ दिलवा दिया जाए तो नये धर्मान्तरण के दरवाजे खुल जाएंगे।
- दुर्भाग्य से भारत सरकार के सत्ताधारी घटक भी इन्हीं षड़यंत्रकारी जातियों की हां में हां मिलाकर धर्मान्तरित अनुसूचित जाति के आरक्षण की मांग करने में लगे हुए हैं। यदि ये मांग स्वीकार हो जाती है तो जो काम मुगल शासक और अंग्रेज शासक भी नहीं कर सके, वह काम सोनिया गाँधी की सरकार करके दिखा देगी।

जिहाद का एक विकराल रूप
जनसंख्या का असंतुलन

समान नागरिक संहिता बनाने के संदर्भ में उच्चतम् न्यायालय के द्वारा केन्द्रीय सरकार को आदेश दिए जाने के बावजूद ये

सेक्युलरिस्ट राजनेताओं के द्वारा आदेश की उपेक्षा करने के कारण आज भारत में जनसंख्या का असंतुलन हो रहा है।

जनगणना के आधार पर (प्रति १० वर्ष में) मुसलमानों की वृद्धि दर ३३ प्रतिशत और हिन्दुओं की मात्र २३ प्रतिशत है। ये आँकड़े बताते हैं कि वर्ष २०४० में हिन्दू अल्पसंख्यक हो जाएँगे। मुसलमानों के थोक वोट के लालच में सेक्युलरिस्ट राजनेता केवल अपना स्वार्थ देखते हैं, इन्हें देश में बढ़ती हुई, जनसंख्या के असंतुलन की कोई चिन्ता नहीं है।

अगर इसी प्रकार जनसंख्या असंतुलन का अनुपात बना रहा तो भविष्य में भारत के और टुकड़े होने की प्रबल संभावना है। अतएव समय रहते पूज्य सन्तगण इस संदर्भ में समाज का मार्गदर्शन करें जिससे हिन्दू समाज को बचाया जा सके और दो से अधिक बच्चों के हर तरह के नागरिक अधिकार समाप्त किये जायें।

'हम दो हमारा एक' का नारा केवल हिन्दू समाज के लिए है। इससे भविष्य में हिन्दू परिवारों से सैनिक-सन्त देश को कहाँ से मिलेंगे? इसी सदी के बीतते-बीतते हिन्दू अल्पसंख्यक हो जायेगें।

अतः आज इस गम्भीर विषय पर चिन्तन करने और समाज में जन जागृति की परम् आवश्यकता है।

❏❏❏

इस्लामिक जिहाद

कट्टरवाद- इतिहास की पुस्तकों से यह भलीभांति स्पष्ट हो चुका है कि भारत प्रचण्ड आक्रमणों के सामने क्यों हारा? इसका प्रमुख कारण भारतीयों में युद्ध करने के गुणों की एवं क्षमता की कमी नहीं थी वरन् इस्लामी आक्रमणकारियों के हाथों हमारी पराजय और हजारों वर्ष की हमारी लम्बी दासता और परस्पर का वैमनस्य प्रमुख कारण था, इस्लामी मानसिकता के विषय में हमारा घोर अज्ञान।

यद्यपि पृथ्वीराज चौहान, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, गुरू गोविन्द सिंह और अनेकों श्रेष्ठतम् वीर पुरूष अपने-अपने समय के हमारे श्रेष्ठतम् योद्धा थे।

जिन्होंने मुगलों के दांत खट्टे कर दिये। परन्तु हमारे इन आधुनिक नेताओं ने पंचशील और धर्म-निरपेक्ष जैसे नारे गढ़ लिए और जंन साधारण को घोर विनाश के लिए अग्रसर कर दिया।

मुसलमान, इस वज्र मूर्खता, को देखकर, मन की मन मुस्कराते रहे। यह निबंध इस्लाम के प्रमुख आधार स्तंभ **'जिहाद'**, जिसके विषय में काफिर हिन्दुओं को पूर्ण अनभिज्ञता व भ्रम है, उनको तत्कालिक ज्ञान की अत्यन्त आवश्यकता है।

जिहाद का वास्तविक अर्थ कुरान के ही शब्दों में इस प्रकार है-

'उनसे युद्ध करो जो अल्लाह और कयामत के दिन में विश्वास नहीं करते, जो उस अल्लाह के बताये गये रास्ते पर नहीं चलते। और तब तक युद्ध करो जब तक कि वे जजिया (कर) न दे दें और वे दीन हीन न बना दिये जाएं अर्थात् पूर्णतः झुका न दिये जाएं।'

(सूरा ९ आयत २५)

गैर मुस्लिम लोगों के विरूद्ध अल्लाह की राह में किये गये युद्ध का नाम इस्लामिक धर्म ग्रन्थों में, **'जिहाद'** कहा जाता है। प्रारम्भिक युग में अरब के अन्दर मूर्ति पूजकों, यहूदियों और ईसाइयों के विरूद्ध जिहाद का युद्ध लड़ा जाता था।

इस्लाम के अनुसार जिहाद अल्लाह की सेवा के लिए लड़ा जाता है, और पाकिस्तानी सेना के एक अधिकारी ब्रिगेडियर एस०के० मलिक ने जैसा लिखा है कि-

जिहाद अल्लाह के अनुयायियों व भक्तों का सर्वाधिक आवश्यक कर्तव्य है, देखिये कुरान के अनुसार-

'युद्ध के कुरान सम्बन्धी मापदण्ड का प्रमुख स्रोत यह तथ्य है कि युद्ध अल्लाह के निमित्त ही लड़ा जाता है। ...... अल्लाह के उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए युद्ध करने के विषय में मुसलमानों को एक धार्मिक कर्त्तव्य एवं दायित्व के रूप में आज्ञा है।'

(कुरानिक कन्सैप्ट ऑफ वार पृष्ठ ४४)

कुरान कहता है- 'चाहे निहत्थे हों अथवा हथियारों से पूर्णतः युक्त हों, अग्रसर हो. अल्लाह के लिए युद्ध करो। अपनी

धन सम्पत्ति से और अपने शरीर से यदि तुम समझ सको तो यही तुम्हारे लिए सर्वश्रेष्ठ है।' (सूरा ९, आयत ४१)

'तुम्हारे लिए युद्ध करना अनिवार्य है। भले ही तुम्हें वह नापसंद हो, तुम उसे ना चाहो तो भी।'

(सूरा ९ आयत २१६)

इस्लामी शब्दकोश में मुहम्मद के उद्देश्य में जिनका विश्वास नहीं है उनके विरूद्ध धर्म युद्ध ही जिहाद है। दैवीय संदेश (कृतियां) कुरान व हदिसों में प्रतिपादित और इस्लाम के विस्तार के लिए विशेषकर बलपूर्वक आग्रह किया गया, यह **'जिहाद'** एक अनिवार्य धार्मिक दायित्व है।

(डिक्शनरी ऑफ इस्लाम, टी.पी.ह्यूज कृत पृष्ठ २४३)

सुरा २, आयत १९३ में कुरान कहता है-

उनके विरूद्ध तब तक युद्ध करो जब तक मूर्ति पूजा पूर्णतः समाप्त न हो जाये और अल्लाह के पंथ कि विजय सर्वत्र सम्पन्न न हो जाये।'

यदि 'गैर-मुसलमान' इस्लाम स्वीकार नहीं करते या जजिया (धार्मिक टैक्स) देना अस्वीकार कर देते हैं तो मुसलमान युद्ध करने के लिए आवश्यक सभी साधनों (अस्त्र-शस्त्र) से उन पर आक्रमण कर दें, उनके आवासों और मंदिरों में आग लगा दें, उनके बाग बगीचों को तोड़ डालें, और उनके खेत खलिहानों को गैंद डालें। ये सभी मार्ग विधि संगत हैं क्योंकि इनसे 'गैर मुसलमान दुर्बल हो जाते हैं, उनकी सहन शक्ति समाप्त हो जाती है। और उनके साधन-समाप्त हो जाते हैं। देखिये-

इस विषय में कुरान का आदेश इस प्रकार है-

'गैर मुसलमानों' के हृदयों में भय भर दूंगा, उनके सिर तोड़ दूंगा, और उनके अंगों को काट दूंगा।'

(सुरा ८ आयत १)

आतंकवाद पर कुछ मुख्य प्रश्न

अब आप स्वयं ही गम्भीरता पूर्वक सोचें कि जहां पर इस तरह की शिक्षा दी जायेगी, भला वहां आतंकवाद क्यों नहीं फैलेगा? अतः सबसे पहले इस तरह की शिक्षा पर प्रतिबन्ध लगाकर परस्पर सौहार्दपूर्ण मेल-मिलाप वाली वैदिक शिक्षा का प्रचार व प्रसार करना होगा।

प्रश्न १. आतंकवाद को इस्लामिक आतंकवाद ही क्यों कहते हैं? क्या श्री लंका में एल.टी.टी.ई. का आतंकवाद, हिन्दू आतंकवाद नहीं है?

उत्तर- क्या तमिलनाडु के तमिल हिन्दू या दुनिया का कोई भी हिन्दू श्रीलंका में एलटीटीई के पक्ष में लड़ने के लिए गया है?

प्रश्न २. क्या एलटीटीई कहती है कि हमारी प्रेरणा हिन्दू धर्म ग्रंथ हैं?

उत्तर- नहीं।

इसलिए विश्व में हिन्दू आतंकवाद नहीं है। कश्मीर में पूरी दुनिया के मुसलमान लड़ने के लिए क्यों आते हैं? क्योंकि कश्मीर का प्रश्न उनकी नजरों में इस्लामिक प्रश्न है। सभी आतंकवादी कहते हैं कि हम जिहाद (कुरान के आदेशों का

पालन) करते हैं। इसलिए यह इस्लामिक आतंकवाद है।

प्रश्न ३. क्या मुसलमान गरीब और निरक्षर है, इसलिए आतंकवादी बन रहे हैं?

उत्तर- क्या ओसामा बिन लादेन निरक्षर है? क्या वर्ल्ड ट्रेड सेंटर तोड़ने वाले विमान के पायलट अनपढ़ थे? क्या वे सब गरीब थे?

नहीं, नहीं। अपितु वे सब अमीर थे और आधुनिक शिक्षा प्राप्त भी थे। प्रश्न गरीबी या निरक्षरता का नहीं है, प्रश्न तो इस जिहाद की शिक्षा का है, देखिये-

- निरक्षर अगर जिहादी बनेगा तो वह पत्थरों से जिहाद करेगा।
- पायलट जिहाद करेगा तो विमान से करेगा।
- गरीब जिहाद करेगा तो सिर्फ शरीर से करेगा।
- ओसामा बिन लादेन जैसा खूंखार आतंकवादी अगर जिहाद करेगा तो वह अरबों डॉलर व मुस्लिम राज्य की स्थापना के लिए जिहाद करेगा। अपने वर्चस्व के लिए करेगा।

प्रश्न ४. क्या मदरसे जिहादी आतंकवाद के लिए जिम्मेदार नहीं हैं?

उत्तर- दुनिया के सभी मदरसे जिहाद सिखाते हैं। पाकिस्तान के ५०० मदरसों ने ६०,००० तालिबान पैदा किए हैं। पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने भी स्वीकार किया है कि मदरसे आतंकवादी पैदा करते हैं। इसलिए आतंकवाद रोकने के लिए मदरसों पर अंकुश लगाना पड़ेगा।

प्रश्न ५. क्या गुजरात्त के दंगों के कारण मुम्बई में बम विस्फोट नहीं हुए?

उत्तर- सन् १९९३ ई० के बम विस्फोट में ३०० लोग मारे गए थे, गोधरा का हत्या काण्ड हुआ कश्मीर में ७०००० नागरिक मारे गए थे, भारत विभाजन के समय दस लाख लोगों की हत्यायें हुई, क्या इन सभी घटनाओं के पहले कहीं पर गुजरात जैसे दंगे हुए थे?

अतः यह साफ है कि गुजरात के दंगों का असर ही मुम्बई में हुआ बम काण्ड है।

प्रश्न ६. साम्प्रदायिक दंगों के लिए क्या राम मंदिर आन्दोलन या विश्व हिन्दू परिषद जिम्मेवार नहीं है?

उत्तर- सन् १९८४ ई० से राम मंदिर आंदोलन प्रारंभ हुआ, इसके पहले क्या दंगे नहीं होते थे? वर्ष १९६४ ई० में विश्व हिन्दू परिषद प्रारंभ हुई, उससे पहले क्या दंगे नहीं होते थे? इसका अर्थ है दंगों के लिए विश्व हिन्दू परिषद या राम मंदिर आंदोलन कतई जिम्मेदार नहीं हैं।

यदि यह मान भी लिया जाये कि दंगों के लिए हिन्दू जिम्मेदार हैं, तो फिर जहाँ हिन्दू हैं वहीं पर दंगे होने चाहिए, जबकि दंगे हो रहे हैं इण्डोनेशिया, मलेशिया, चीन, चेचेनिया, बोसनिया, अल्जीरिया, इज़राइल में जबकि वहाँ कहीं पर भी हिन्दू नहीं हैं।

अतः साफ पता चला कि दंगों के लिए सिर्फ जिहादी शिक्षा ही जिम्मेदार है और कोई नहीं, यह वह है जो सिर्फ और

सिर्फ इस्लाम से जुड़े हुए संगठन हैं।

प्रश्न ७. गुजरात के दंगों में मुसलमानों ने बहुत कुछ सहन किया, इसके कारण वह आतंकवादी बन रहे हैं, क्या यह सच नहीं है?

उत्तर- गोधरा की घटना के पहले गुजरात का एक मौलवी आर.डी. एक्स. एवं पिस्तौल के साथ पकड़ा गया था तथा गोधरा काण्ड का प्रारंभ भी तो कुछ मुसलमानों ने ही किया था।

कश्मीर में ७० हजार लोगों की हत्या हो गई और चार लाख हिन्दू घर छोड़कर शरणार्थी बनने पर मजबूर हो गये, इतने हत्याचार होने के बाद भी कश्मीर का एक भी हिन्दू आतंकवादी क्यों नहीं बना?

अब प्रश्न पैदा होता है कि क्या मुस्लिम युवक आतंकवादी क्या अकेले गुजरात में ही बन रहे हैं? नहीं, ऐसा नहीं है, बल्कि मुंबई में, कोयम्बटूर में, हैदराबाद में, मुरादाबाद में मुस्लिम आतंकवादी भारी संख्या में पैदा हो रहे हैं?

इसका उत्तर भी सिर्फ एक ही है और वह है इस्लामिक- **'जिहादी शिक्षा'**!

जिहादी आतंकवादियों द्वारा किये गये कुछ हमलों के साक्ष्य

१. भारत की संसद पर हमला।

२. गोधरा रेलवे स्टेशन पर ५७ रामभक्तों को जिन्दा जलाना।

३. अक्षरधाम मंदिर गुजरात, रघुनाथ मंदिर जम्मू, सांई मंदिर

हैदराबाद, काशी, मथुरा, अयोध्या सहित ३० हजार मंदिरों पर हमला।

४. भारत के विभाजन* के समय १० लाख लोगों की हत्या एवं एक करोड़ ७५ लाख शरणार्थी।

५. बोमियान में बुद्ध की मूर्त्ति का ध्वंस।

६. कंधार में भारतीय विमान का अपहरण।

७. मुम्बई में हुआ दर्दनाक आतंकी हमला।

यदि हम अब भी जागृत नहीं हुए तो?

१. हमारे मंदिरों पर हमले और बढ़ेंगे।

२. रेलवे स्टेशन, हवाई अड्डे, ट्रेन की पटरी, बस अड्डे, शिक्षा संस्थान, सिनेमाघर, बिजली घर, शेयर बाजार, मॉल, पुल, संसद भवन व जितने भी संवैधानिक क्षेत्र हैं वो सभी इन आतंकवादियों के निशाने पर हो सकते हैं।

अतः आज आवश्यकता है इनकी सुरक्षा की! इसलिए देश हित में इस जेहादी शिक्षा को समाप्त करके आज फैल रहे इस आतंकवाद को समाप्त करना हम सभी का नैतिक कर्त्तव्य है।

□□□

---

* उक्त विषय पर पूर्ण विस्तार से जानने के लिए अवश्य पढ़ें- अमर शहीद नत्थूराम गोडसे के अदालती बयान सहित पुस्तक **'गांधी वध क्यों और कैसे?'** जिसे हमारे द्वारा ही प्रकाशित कराया गया है।

— लाजपत राय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)

मुस्लिम गुरूओं की सोच

१. बांग्लादेश में जारी हिन्दू और बौद्धों के कत्लेआम पर मुझे अफसोस है लेकिन बांग्लादेश एक इस्लामी मुल्क है, सैक्युलर नहीं। अब यहां मुसलमान बहुसंख्यक हैं ऐसे में हिन्दू और बौद्ध अगर महफूज रहना चाहते हैं तो इस्लाम कबूल कर लें या फिर हिन्दुस्तान चले जायें।

(खालिदा बेगम अध्यक्षः बांग्लादेश नैशनलिस्ट पार्टी)

२. हिन्दू नेता चाहे कितनी भी बार मुस्लिम टोपी पहनें लेकिन हम मुस्लिम नेता तिलक नहीं लगायेंगे। हिन्दू चाहे नमाज को कितनी भी इज्जत दे लेकिन हम मुसलमान वन्दे मातरम् का बहिष्कार जरूर करेंगे, क्योंकि इस्लाम में शरीथः का मानना सर्वोपरि है।

(आजमखान नेता, समाजवादी पार्टी उत्तर प्रदेश)

३. हिन्दुस्तान के उत्तर प्रदेश, बंगाल, केरल, हैदराबाद, असम में मुसलमान बहुसंख्यक हो चुके हैं। इस्लाम के अनुसार मुस्लिम बाहुल्य इलाकों में गैर मुस्लिमों की मौजूदगी हराम है। इसलिए हिन्दू इन इलाकों को खाली कर दें वरना उनके साथ हम वही व्यवहार करेंगे जो कश्मीर में हिन्दू पंडितों के साथ किया।

(मौलाना सैय्यद अहमद बुखारी शाही इमाम, जामा मस्जिद, दिल्ली)

४. मुसलमानों ने हिन्दुस्तान पर १२३५ साल राज किया। लाखों हिन्दुओं के सर कलम किये। करोड़ों हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन कर उन्हें मुसलमान बनाया। भारत के टुकड़े कर पाकिस्तान और बांग्लादेश छीना। २००० मन्दिर तोड़कर वहां मस्जिदें

बनायीं। हिन्दू आज भी हमारे डर के कारण हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई का नारा लगाते हैं। ये इस्लाम की ताकत नहीं है तो और क्या है?'

(मौलाना जाकिरनायक, मुम्बई)

५. भारतीय मुसलमानों को पाकिस्तानी मुसलमानों से अलग समझने की गलती ना करें। भारत ने अगर पाकिस्तान पर हमला करने की जुर्रत की तो भारत के २५ करोड़ मुसलमान पाकिस्तानी सेना के साथ मिलकर हिन्दुस्तान के खिलाफ जंग लड़ेंगे।

(असौद्दीन औवेसी लोकसभा सांसद, हैदराबाद भारत)

६. हामिद दलवई की पुस्तक मुस्लिम पालिटिक्स इन सेक्युलर इन्डिया से उद्धृत-अलीगढ़ यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर से अपनी बातचीत का उल्लेख करते हुए श्री हामिद दलवई ने लिखा है-

परिवार नियोजन के मुद्दे पर अपनी बात दो टूक कहते हुए प्रोफेसर ने कहा कि हिन्दू सदा हमको अल्पसंख्यक बनाकर नहीं रख सकते। कनाडा का उदाहरण देते हुए उसने कहा कि क्यूबेक का सवाल केसे उठा? वहां के रहने वाले प्रोटेस्टेन्ट ईसाईयों ने परिवार नियोजन किया किन्तु फ्रेन्च कैथोलिकों ने परिवार नियोजन करना स्वीकार नहीं किया और न अब करते हैं जिसका नतीजा यह हुआ कि क्यूबेक में फ्रेंच कैथोलिकों की जनसंख्या प्रोटेस्टेन्ट ईसाईयों से अधिक बढ़ गई। अब वहां पर फ्रेंच कैथोलिकों का ही बोलबाला है। अब वह अपने हितों की रक्षा स्वयं कर सकते हैं। उनसे सबक लेकर हम मुसलमानों को भी वैसा ही करना चाहिए। आज नहीं तो बीस या पचास साल बाद भारत इस्लामी सैलाब में डूब ही जायेगा। भारत के अन्य

मुसलमान लीडर भी घुमा फिराकर यही बात कहते हैं।

'७. मुस्लिम सम्प्रदाय के नुमाइन्दा अखबार 'रेडियन्स' ने पिछली जनगणना पर अपनी राय जाहिर करते हुए लिखा है- बीते दशक में मुसलमानों की आबादी हिन्दुओं से कई गुणा प्रतिशत अधिक बढ़ी है। इसलिए मुसलमानों को अपने भविष्य के बारे में चिन्ता नहीं करना चाहिए।

८. हिन्दुस्तान दारूल हर्ब अर्थात् शत्रु देश है। वह उस वक्त तक दारूल हर्ब रहेगा, जब तक इस देश में कुफ्र को गल्बा (वर्चस्व) हासिल रहेगा। अर्थात जब तक इसमें गैर मुस्लिमों की हुकूमत रहेगी। हिन्दुस्तान में जब से इकतदारे-इस्लाम (इस्लामी सत्ता) खत्म हुई, तब से ही दारूल हर्ब बना हुआ है।

(मौलाना हुसैन अहमद मदनी)

९. अत्यंत आवश्यक है कि इस निजामें खुदाबंदी- (इस्लामी हुकूमत) को मजबूती से कायम किया जाये, उलमाए हिन्द ने सदैव इसी उद्‌देश्य की पूर्ति के लिए कोशिश की है। परन्तु हाय दुर्भाग्य वास्तविक उद्‌देश्य पूरा न हो सका, बस! जरूरी प्रतीत हुआ कि आहवन-दल-बलियालैन अर्थात् दो मुसीबतों में से छोटी मुसीबत के नियम को अख्तियार किया जाये, और हिन्दुस्तान की आजादी के लिए संयुक्त जद्दोजहद में हिस्सा लिया जाये। और यद्यपि संयुक्त जद्‌दोजहद से प्राप्त होने वाली आजादी निजामें इस्लामी (इस्लामी हुकूमत) न कहला सकेगी, फिर भी बहुत सी कठिनाइयों और सख्त रूकावटों के दूर हो जाने से वास्तविक उद्‌देश्य के लिए रास्ता तो खुल ही जायेगा।

(अध्यक्षीय भाषण, मौलाना हुसैन अहमद मदनी सालाना अधिवेशन जमायते उल्माए हिन्द लाहौर सन् १९४२ ई०)

१०. मौलाना हुसैन अहमद मदनी स्वीकार करते थे कि-

हिन्दू-मुसलमानों की संगठित राष्ट्रीयता, आजादी तथा समृद्धि के लिए संगठित प्रयास करना एक विशेष मामला है, जिसका ताल्लुक सिर्फ मुल्के हिन्दुस्तान और उसके बसने वालों से और उनके सांसारिक जीवन से है। यह भावी स्थिति के सामने एक अर्जी (अस्थायी) और जिल्ली (अवास्तविक) चीज है। और जब तक किसी मुल्क में भिन्न-भिन्न कौमें और मजहब बसते हैं, तभी उनकी जरूरत है। सब के सब मुसलमान हो जाने के बाद जो कि औलीन (सबसे पहला) और असली मकसद (उद्देश्य) है, यही बाकी नहीं रहता। उन्होंने फरमाया कि मुसलमाने-हिन्द को दोनों मसलों पर पूरी तौर पर हिस्सा लेना जरूरी है और लाजमी है। एक में हिस्सा लेना दूसरे के मुनाफी (वर्जित) नहीं है।

(मुकुट बिहारीलाल, कृत भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन भाग २ पृष्ठ ५६९)

इस पुस्तक के प्रकाशन से हमारा मकसद किसी धर्म के प्रति नफरत फैलाना नहीं है बल्कि यह सचेत करना है कि हिन्दुओं अब भी समय है, जाग जाओ, संगठित हो जाओ वरना मिट जाओगे।

- **स्वामी अखिलानन्द सरस्वती**

(वैदिक प्रवक्ता)

नोट- अपने सामाजिक कार्यक्रमों में प्रचार हेतु बुलाने के लिए सम्पर्क करें।

(सम्पर्क : ०९४१२१०२६९२)

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग द्वारा उपलब्ध इस्लामिक साहित्य की सूची

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक	मूल्य
१.	खुदा और शैतान	डॉ० श्रीराम आर्य	३.००
२.	खुदा का रोजनामचा	डॉ० श्रीराम आर्य	३.००
३.	कुरान पर १७६ प्रश्न (मौलवी जवाब दें)	डॉ० श्रीराम आर्य	२५०.००
४.	कुरान खुदायी किताब नहीं है	डॉ० श्रीराम आर्य	३.००
५.	कुरान की छानबीन	डॉ० श्रीराम आर्य	५००.००
६.	कुरान में परस्पर विरोधी स्थल	डॉ० श्रीराम आर्य	१०.००
७.	जिहाद के नाम पर दुनिया को कैसे-मुसलमान बनाया गया?	लाजपत राय अग्रवाल	१५०.००
८.	हिन्दुओं का अस्तित्व खतरे में	लाजपत राय अग्रवाल	३०.००
९.	काला पहाड़ (रक्तरंजित इतिहास)	लाजपत राय अग्रवाल	५०.००
१०.	हिन्दू कब समझेगा अपनी-मौत को?	लाजपत राय अग्रवाल	३०.००
११.	मुस्लिम आतंकवाद (कारण और-निवारण)	डॉ० राकेश कुमार आर्य एडवोकेट	१०.००
१२.	भारतीय मुसलमानों के हिन्दू पूर्वज मुसलमान-कैसे बने?	डॉ० राकेश कुमार आर्य एडवोकेट	१५०.००
१३.	इस्लाम सन्देहों के-घेरे में	डॉ० राकेश कुमार आर्य एडवोकेट	५९५.००

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक	मूल्य
१४.	इस्लाम के दीपक	पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय	६००.००
१५.	गाज़ी मियां की पूजा- और हिन्दू	पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय	३.००
१६.	इस्लाम और आर्य समाज	पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय	३.००
१७.	कुरान में परिवर्तन	मौलाना गुलाम हैदर अली उर्फ पं० सत्यदेव काशी	१५०.००
१८.	दिल्ली कोर्ट का कुरान पर ऐतिहासिक फैसला	जे०एस० लोहाट (न्यायामूर्ति)	१०.००
१९.	जिहाद के नाम पर कत्लेआम	अमर स्वामी सरस्वती	१०.००
२०.	अन्तिम हिन्दू (एक गम्भीर चेतावनी)	पुरूषोत्तम योग	३०.००
२१.	भारत को हिन्दू राज्य घोषित करो	बलराज मधोक	१०.००

नोट- विस्तृत जानकारी के लिए प्रकाशन से सम्पर्क स्थापित् करें।

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद, पिन०-२०१००१ (उ०प्र०)

दूरभाष : ०१२०-२७०१०९५, ०१२०-२७०००४२

०९९१०३३६७१५, ०९८१०८१६७१५, ०९८७१२३०३२१

E-mail : lajpatraiaggarwal1058@gmail.com

Website: www.amarswamiprakashanvibhag.com

संगठन–सूक्त

ओ३म् सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर॥१॥

हे प्रभो! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिए धन-वृष्टि को॥

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजनाना उपासते॥२॥

प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो॥

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि॥३॥

हों विचार समान सबके चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब नेक हों॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥४॥

हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिस से बढ़े सुख-सम्पदा॥

शान्तिपाठ

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

साहित्य जगत में जिसका नाम ही काफी है।

प्रस्तुत पुस्तक के सम्पादक एवं समीक्षक

लाजपतराय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)

प्रकाशक :

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग, गाजियाबाद

E-mail : lajpatraiaggarwal1058@gmail.com
Website: www.amarswamiprakashanvibhag.com
Ph. : 0120-2701095, 0120-2700042, 09910336715, 09871230321, 09810816715